MERIKHETI

मेरी खेती

Pages:- 1- 25 | www.merikheti.com | हिंदी | अक्टूबर 2021

ग्रीनहाउस टेक्नोलॉजी में रोजगार की अपार संभावनाएं

स्प्रिंकलर सिस्टम यानी कम पानी में खेती

गजब का कारोबार ब्रायलर मुर्गी पालन

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन की संपूर्ण जानकारी

खेती की सनक ने भरत भूषण त्यागी को बनाया पद्मश्री किसान

टमाटर की लाली लाएगी खुशहाली

हरियाणा सरकार का किसानों को लघु सिंचाई का तोहफा

प्याज भंडारण को लेकर सरकार लाई सौगात, मिल रहा है ५० फीसदी अनुदान

अरंडी की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

जितना खेत,उतना मिलेगा यूरिया

अच्छी आय और आवारा पशुओं से मुक्ति

मासिक कृषि कार्य

www.merikheti.com Krishan@merikheti.com +91 766 8256 275

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं
कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए.पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी
विश्वविद्यालय मथुरा

डॉ.एस.के.गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

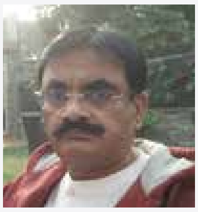

डॉ.ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण
(सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर राजस्थान

श्री सुधीर अग्रवाल
(प्रगतिशील किसान)

तेजपाल सिंह
(प्रगतिशील किसान)

दिलीप यादव
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

श्री छेदालाल पाठक
(संरक्षक मार्गदर्शक)

कृष्ण पाठक
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

अहिंसा, आन्दोलन और किसान

सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह का अपने जीवन में महात्मागांधी ने अद्वितीय प्रयोग किया। जिस सत्याग्रह के दम पर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की सरकार को बगैर किसी को नुकसान पहुंचाए हिला दिया और बिखरे भारत को एकता के सूत्र में पिरोकर आजादी की लड़ाई लड़ी, आज सत्याग्रह के उस तरीके का हवाला देकर आन्दोलन कर रहे किसान संगठनों के तौर तरीकों को लेकर देश की सर्वोच्च अदालत को टिप्पणी करनी पड़ी है। वजह साफ है सरकार और किसान दोनों की हठधर्मिता के पाटों के बीच आम जन पिस रहा है। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी इस लिए भी वाजिव है क्योंकि एक तरफ देश के करोड़ों किसान हैं वहीं दूसरी तरह भागमभाग भरी जिंदगी जीने वाले लाखों लाख लोग।

आन्दोलन के तरीके भले ही पुराने हैं लेकिन इनके माईने बदल गए हैं। करीब १० माह से कृषि कानूनों का विरोध कर रहे किसानों ने लम्बे समय तक आन्दोलन को अहिंसक रखा लेकिन गुजरे महीनों में इसका अंत हिंसक हो ही गया। कई राज्यों के किसानों के अलग अलग नेता भीड़ को नियंत्रित नहीं कर पाए या फिर भीड़ में कुछ असामाजिक तत्व घुस गए। हालात चाहे जोभी रहे हों लेकिन किसी को वह नजारा अच्छा नहीं लगा। यही हाल शाहीनबाग के आन्दोलन का रहा। यह भी सड़क पर होने के कारण लोगों के लिए परेशानी का कारण बना। सुप्रीमकोर्ट को इसे लेकर भी टिप्पणी करनी पड़ी।

दिल्ली की सीमाओं पर किसानों द्वारा किए जा रहे आन्दोलन को लेकर न्यायमूर्ति एवं खानविलकर ने कहा कि आपने कोर्ट का दरवाजा भी खटखटाया है और सत्याग्रह भी चल रहा है। न्यायमूर्ति ने इन हालात में व्यवस्था पर भरोसे रखने की नसीहत दी है। नसीहत भले ही मौखिक हो लेकिन इसका संदेश बहुत गहरा है। किसान संगठन और सरकार दोनों को इस पर गहराई से चिंतन करना चाहिए। देश के किसानों के भले के लिए बनाए गए कानूनों को लेकर इतने कोहराम के हालात पैदा होने के पीछे सरकार की ओर से हुई कुछ गलतियां ही हैं। किसानों के साथ किसी तरह के समझौते की सार्थक परिणति न होने के लिए भले ही विपक्ष को जिम्मेदार ठहराया जाए लेकिन दोनों ही स्थितियां किसी माईने में अच्छी नहीं कही जा सकतीं। देश की सर्वोच्च अदालत को जिस मामले में सीधे तौर पर दखल देना पड़े इसे किसी भी रूप में अच्छा संकेत नहीं माना जा सकता। सत्याग्रह को लेकर किसान संगठनों को चिंतन करना चाहिए। इधर सरकार को भी बीच का रास्ता निकालकर इस विरोध को खत्म करने की दिशा में पहल करनी चाहिए।

— दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

ग्रीनहाउस टेक्नोलॉजी में रोजगार की अपार संभावनाएं

संरक्षित खेती उसे कहते हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों में की जाए। दूसरे अर्थों में इस तरह से समझा जा सकता है कि बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन वह भी कंट्रोल कंडीशन में कृत्रिम माहौल तैयार करके किया जाता है। ग्रीन हाउस, पॉलीहाउस, नेट हाउस आदि तकनीकी इसी श्रेणी में आती हैं।

इस तकनीकी के कई फायदे हैं।पौधों के लिए अनुकूल सूक्ष्म जलवायु परिस्थितियों को यहां प्रदान की जा सकती हैं। किसी भी मौसम में किसी भी सब्जी को उगाया जा सकता है। कम क्षेत्रफल में गुणवत्ता युक्त बेहतर उत्पादन पाया जा सकता है। कम पानी में पर्याप्त सिंचाई की जा सकती है। उच्च मूल्य वाली बेमौसमी फसलों की खेती के लिए बेहद उपयुक्त होता है। नाशी जीवा और रोगों की रोकथाम में सहायक होता है। अगेती नर्सरी तैयार करके पौध भेजी जा सकती है।हवा वर्षा बर्फ ठंड पक्षियों एवं ओलावृष्टि से फसल बची रहती है। शिक्षित युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर प्रदान करता है।

ग्रीन हाउस प्रौद्योगिकी की क्षमता

ग्रीनहाउस टेक्नोलॉजी में अपार क्षमताएं विद्यमान हैं। इसे प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में भी फसल उत्पादन किया जा सकता है। ग्रीन हाउस में संकर बीजों, सजावटी पौधों और सगंधीय पौधों का निर्माण किया जा सकता है।

यह प्रौद्योगिकी अनुवांशिक इंजीनियरिंग के लिए उपयुक्त है। दुर्लभ एवं विदेशी औषधीय एवं सजावटी प्रजातियों की खेती इसमें आसानी से की जा सकती है। उच्च मूल्य कम, आयतन वाली बागवानी फसलों को यहां तैयार किया जा सकता है। शहरों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले ताजे फल सब्जियां एवं फूलों की आपूर्ति इसके माध्यम से संभव है।

ग्रीन हाउस की किस्में:

भारतीय जलवायु परिस्थितियों को ध्यान में रखकर सब्सिडी के लिए भारत सरकार की राष्ट्रीय बागवानी मिशन आदि योजनाओं में दो प्रकार के ग्रीन हाउस पर विचार किया गया है और इनमें प्राकृतिक रूप से हवादार पंखा तथा पेड कूलिंग प्रणाली के साथ ग्रीनहाउस शामिल हैं। साथ ही लकड़ी और बांस की संरचना से बने सस्ते ग्रीन हाउस के लिए भी सब्सिडी का प्रावधान किया गया है।

प्राकृतिक रूप से हवादार ग्रीन हाउस:

इस प्रकार के ग्रीनहाउस इन इलाकों के लिए ज्यादा उपयुक्त है जहां का तापमान 15 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। ग्रीन हाउस संरचना में हवा संचालन के लिए पर्याप्त संख्या में हवा आने वाले दरवाजे व खिड़कियों को लगाया जाता है। जलवायु परिस्थितियों पर निर्भर करते हुए फर्श क्षेत्रफल के हिसाब से 70: तक हवा संचरण का प्रावधान होना चाहिए। ग्रीन हाउस के अंदर साइड वाली दीवार में सुराख कर अथवा छत में सुराख अथवा हवा गर्म एवं ठंडी के रास्ते बनाए जाते हैं।

गर्मियों के महीनों में इस प्रकार से हवा के रास्तों को रखा जाए ताकि पर्याप्त व संचालन सुनिश्चित हो और सर्दियों में इन हाउस को पूरी तरह से हवा रोधी रखना चाहिए।

पंखा एवं पैड कूलिंग वाले ग्रीनहाउस:

इस प्रकार के ग्रीनहाउस गर्म शुष्क जलवायु परिस्थितियों उत्तरी मैदानी इलाकों के लिए उपयुक्त होते हैं जहां तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाता है। यह प्रणाली उस सिद्धांत पर कार्य करती है जिसमें जल का वाष्पन होता है और आसपास के परिवेश से ताप का अवशोषण होता है। दीवार के एक ओर से लगाए गए नमी वाले पैड के माध्यम से उसमें ठंडी हवा को भेजकर ऐसा करना संभव होता है। जहां दीवार के विपरीत सिरों पर लगे अक्षीय पंखों द्वारा गर्म हवा गो ग्रीन हाउस से बाहर निकाला जाता है। अत्यधिक तापमान के कारण पौधों की आकृति विज्ञान तथा शरीर क्रिया विज्ञान प्रक्रियाओं को अनेक प्रकार का नुकसान होता है । जैसे फूल का रंग बिगड़ना, पत्तियों का झुलसना, घटिया फल गुणवत्ता, अत्यधिक वाष्पोत्सर्जन पौधों की जीवन अवधि छोटी होना जैसी दिक्कतें पैदा हो जाती हैं। हाउस के अंदर का तापमान 20 डिग्री सेल्सियस से 28 डिग्री सेल्सियस बनाए रखना होता है।

पंखा एवं पैड कूलिंग प्रणाली का ऑपरेशन:

पंखा एवं पैड प्रणाली को थर्मोस्टेट द्वारा नियंत्रित किया जाता है थर्मोस्टेट से नियंत्रित पंखे बाहर की हवा को ग्रीन हाउस के अंदर छोड़ते हैं और अंदर की हवा को बाहर निकालते हैं प्रति मिनट ग्रीनहाउस आयतन के प्रत्येक 1 मीटर के लिए पंखे की क्षमता एक घन मीटर होनी चाहिए ताकि उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों के तहत एक पूर्ण नवीनीकरण का कम से कम उसका तीन चौथाई या अधिक नवीनीकरण प्रति घंटा 50 से 60 नवीनीकरण सुनिश्चित किया जा सके।

ग्रीन हाउस संरचना को चयन करने के मानक

जहां तक संभव हो जी आई पाइप आधारित ग्रीन हाउस में न्यूनतम 2 मिलीमीटर दीवार मोटाई के साथ आई एस आई मां कसम नहीं लगना चाहिए। ग्रीन हाउस के विस्तार के लिए विकल्पों के साथ स्टेप टाइप एंकरिंग बुनियाद गेलवेनाइज्ड तथा नट बोल्ट वाली संरचना होनी चाहिए। लाइव लोड, डेड लोड, फसल लोड हवा तथा इस स्नो लोड जैसे विभिन्न प्रकार के लोड अथवा भार को सहन करने के लिए पर्याप्त मजबूती होनी चाहिए। सिंगल टुकड़ा जी आई गाटर 500 मिली मीटर चौड़ा और 1 मीटर मोटा होना चाहिए। हवा के तेज बे को सहन करने के लिए सभी परिधि के साथ एरोडायनेमिक आकृति होनी चाहिए।150 किलोमीटर प्रति घंटा तक के बेग को सहन करने की क्षमता डिजाइन में होनी चाहिए।

क्लैडिंग अथवा आवरण सामग्री :- ग्रीन हाउस प्लैनिंग अथवा आवरण या ढकने के लिए दो प्रकार की प्लास्टिक फिल्मों का उपयोग किया जाता है।

ग्रीन हाउस प्लैनिंग अथवा आवरण या ढकने के लिए दो प्रकार कीप्लास्. टक फिल्मों का उपयोग किया जाता है। पहली एकल परत वाली स्पष्ट पारदर्शी यूवी स्टेबलाइज्ड फिल्म और विशिष्ट फिल्में तथा डिफ्यूज्ड बूंद रोध ी, धूल रोधी, सल्फर रोधी आदि। प्ला. स्टिक फिल्म का चुनाव ग्रीन हाउस में बोई गई फसलों और उत्पादन चक्र के दौरान किए गए विभिन्न रासाय. निक उपचारों के आधार पर किया जाए। प्लास्टिक फिल्म में तीन प्रकार के होती है सामान्य फिल्म, थर्मिक क्लियर फिल्म, धार्मिक प्रसार अथवा फैलाव वाली फिल्म। फिल्म में 80: से अधिक पारदर्शिता और अल्प ग्रीन हाउस प्रभाव, इंफ्रारेड प्रभावशीलता होनी चाहिए।

कैसे मिलेगा अनुदान

ग्रीन हाउस एवं पॉलीहाउस लगाने के लिए उद्यान इनोवेशन के अंतर्गत अनुदान प्रदान किया जाता है। इसके लिए देश के किसी भी राज्य में जिला उद्यान अधिकारियों के माध्यम से कार्य योजना बनाकर शासन को भेजी जाती है और उसके अनुरूप ग्रीन हाउस पॉलीहाउस स्थापित किए जाते हैं। तदोपरांत अनुदान की धनराशि किसान के खाते में डीबीटी के माध्यम से भेज दी जाती है।वर्तमान समय इस योजना का लाभ लेने के लिए बिल्कुल उपयुक्त समय है। अपने नजदीकी जिला उद्यान अधिकारी कार्यालय में संपर्क कर या शासन की उद्यान विभाग की वेबसाइट पर जाकर विस्तृत जानकारी ले सकते हैं।

स्प्रिंकलर सिस्टम यानी कम पानी में खेती

फव्वारे छोटे से बड़े क्षेत्रों को कुशलता से कवरेज प्रदान करते हैं तथा सभी प्रकार की संपत्तियों पर उपयोग के लिए उपयुक्त हैं। यह लगभग सभी सिंचाई वाली मिट्टियों के लिये अनुकूल हैं क्योंकि फव्वारे विस्तृत विसर्जन क्षमता में उपलब्ध हैं। कृषि के लिए सिंचाई बहुत आवश्यक होती है बिना सिंचाई के कृषि में एक दाना भी उपजाना संभव नहीं है। जिन क्षेत्रों में भूमिगत जल या नदियों-नहरों की अच्छी व्यवस्था है वहां तो सिंचाई आराम से की जा सकती है, लेकिन बहुत से क्षेत्रों में न तो भूमिगत जल की उपलब्धता है और न ही नदी या नहर की व्यवस्था है। ऐसे में सिंचाई अति कठिन कार्य हो जाता है। बहुत कम पानी के प्रयोग से ही सिंचाई करनी होती है। ऐसे क्षेत्रों के लिए छिड़काव सिंचाई प्रणाली यानी स्प्रिंकलर और ड्रिप सिंचाई प्रणाली बेहद कारगर साबित हो सकती हैं। सिंचाई की इन पद्धतियों से कम पानी में अच्छी उपज ली जा सकती है।

छिड़ काव सिंचाई प्रणाली

छिड़काव सिंचाई, पानी सिंचाई की एक विधि है, जो वर्षा के समान है। पानी पाइप के माध्यम से आमतौर पर पम्पिंग द्वारा सप्लाई किया जाता है। वह फिर स्प्रे हेड के माध्यम से हवा और पूरी मिट्टी की सतह पर छिड़का जाता है जिससे पानी भूमि पर गिरने वाले पानी की छोटी बूँदों में बंट जाता है। फव्वारे छोटे से बड़े क्षेत्रों को कुशलता से कवरेज प्रदान करते हैं तथा सभी प्रकार की संपत्तियों पर उपयोग के लिए उपयुक्त हैं।

यह प्रौद्योगिकी अनुवांशिक इंजीनियरिंग के लिए उपयुक्त है। दुर्लभ भव है।

ड्रिप सिंचाई प्रणाली:

ड्रिप सिंचाई प्रणाली यानी टपक सिंचाई फसल को बूंदों के माध्यम से सींचती है। इसमें छोटी नलियों के माध्यम से पंप द्वारा पानी पाइपों तक पहुंचता है। इनमें लगे नाजिल की मदद से पौधों और फसल को बूंद बूंद कर पानी पहुंचता है। जितने पानी की जरूरत है उतनी मात्रा में और नियत लक्ष्त तक ही पानी पहुंचाने में यह विधि बेहद कारगर है। पानी सीधे पौधे की जड़ों में आपूर्ति करता है। पानी और पोषक तत्व उत्सर्जक से, पौधों की जड़ क्षेत्र में से चलते हुए गुरुत्वाकर्षण और केशिका के संयुक्त बलों के माध्यम से मिट्टी में जाते हैं। इस प्रकार, पौधों की नमी और पोषक तत्वों की कमी को तुरंत ही पुनः प्राप्त किया जा सकता है। यह सुनिश्चित करते हुए कि पौधे में पानी की कमी नहीं होगी।

ड्रिप सिंचाई आज की जरूरत है, क्योंकि प्रकृति की ओर से मानव जाति को उपहार के रूप में मिली जल असीमित एवं मुफ्त रूप से उपलब्ध नहीं है। विश्व जल संसाधनो में तेजी से ह्रास हो रहा है।

ड्रिप सिंचाई प्रणाली के लाभ:

पैदावार में 150 प्रतिशत तक वृद्धि। बाढ़ सिंचाई की तुलना में 70 प्रतिशत तक पानी की बचत।

अधिक भूमि को इस तरह बचाये गये पानी के साथ सिंचित किया जा सकता है। फसल लगातार,स्वस्थ रूप से बढ़ती है और जल्दी परिपक्व होती है। शीघ्र परिपक्वता से उच्च और तेजी से निवेश की वापसी प्राप्त् होती है। उर्वरक उपयोग की क्षमता 30 प्रतिशत बढ़ जाती है।

उर्वरक, अंतर संवर्धन और श्रम का मूल्य कम हो जाता है। उर्वरक लघु सिंचाई प्रणाली के माध्यम से और रसायन उपचार दिया जा सकता है। बंजर क्षेत्र, नमकीन, रेतीली एवं पहाड़ी भूमि को भी उपजाऊ खेती के अधीन लाया जा सकता है।

90 प्रतिशत तक मिलती है छूटे:

ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिस्टम लगाने पर राज्यों में अलग अलग छूट की व्यवस्था की है। उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान सहित कई राज्यों में इस पर केन्द्र और राज्य सरकारों की ओर से 90 प्रतिशत तक अनुदान की व्यवस्था है। किसान हर जनपद स्थित उद्यान विभाग में पंजीकरण कराकर इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

गजब का कारोबार ब्रायलर मुर्गी पालन

देसी मुर्गी से साल में औसतन 60 से 80 अंडे प्राप्त होते हैं वाइट 11 से 240 से 3 से एवं रोड आयरन से 210 से 260 घंटे प्राप्त होते हैं। चीजों की सही देखभाल 1 दिन से लेकर 6 हफ्तों या 20 सप्ताह तक करनी होती है। अंडे वाली मुर्गी की देखभाल इससे ज्यादा करनी होती है।बीमारी के टीके लगने के बाद 3 दिन तक मुर्गियों को पानी याद आने में मिलाकर विटामिन की खुराक देनी चाहिए। इसी तरह 2 से 3 महीने में कीड़े मारने की दवा दें।

ब्रायलर: चीजों को जन्म लेने के बाद से 8 हफ्ते तक विकास करने के बाद ही उनका मास के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। मुर्गी जितना खाती है उसी अनुपात में उसके शरीर पर मांस बढ़ता है। मुर्गी का 6 हफ्ते का वजन अट्ठारह सौ से 21 सौ ग्राम हो जाता है। ब्राउजर को दो तरह का दाना दिया जाता है। ब्राउजर स्टार्टर यह ब्राउजर फिनिशर। हर इलाके में मुर्गी फार्म खोलने के कारण यह दाना अब कहीं भी आसानी से मिल जाता है। सस्ता दाना बनाने के लिए किसान थोड़ी सी जानकारी हासिल करके फसल के समय पर ही दाने का इंतजाम कर सकते हैं। पोस्टिक दानों से मुर्गी काफी विकसित होती हैं और उनमें मांस की प्रचुर मात्रा तैयार होती है।

बीमारी:

1.कालरा नामक बीमारी में हरि पतली बिठाना बुखार आना पक्षियों की अचानक मौत आदि लक्षण दिखते हैं।
इस बीमारी से बचाव के लिए सलमेट दवा दाने या पानी के साथ देनी चाहिए।

2.सफेद दस्त नामक बीमारी चीजों को अधिक होती है। बचाव के लिए नेफ्टिन दवा को दाना या पानी के साथ दें।

3.नीली कलगी बड़े पक्षियों में होने वाली बीमारी है। इसमें बुखार आना कल भी का नीला पढ़ना जैसे लक्षण दिखते हैं बचाव के लिए होस्टासाइक्लिन यास्टेक्लिन दवा को पानी के साथ दें।

4.सालमोनेलासिस बीमारी में बुखार आना, कलगी का रंग फीका पड़ना, हरी बीट एवं पक्षियों की मौत होती है। बचाव के लिए सलमेट दवा को पानी के साथ दें।

5.रानीखेत बीमारी मैं पक्षियों की गर्दन टेढ़ी हो जाती है तथा सांस लेने में तकलीफ होती है। इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है बचाव के लिए लाशों के रानीखेत का कोई टीका दें।

6.चिकन पॉक्स बीमारी में शरीर के बाल रहित हिस्सों पर फुंसियां उभर आती हैं। बचाव के लिए चिकन पॉक्स का टीका बराबर दें।

गमबोरो-

पक्षियों की रोगों से लड़ने की क्षमता कमजोर होने के कारण दूसरी बीमारियों का शिकार होता है उसी स्थिति को गम बोरो कहते हैं। इस तरह की समस्या से बचने के लिए पक्षियों को टीके समय पर लगवाएं। 1 दिन के चूजे को इस बीमारी का टीका उसके पंख में लगाएं।

कोक्सिडियोसिस खूनी बीट 1 से 6 हफ्ते के पक्षियों में इस बीमारी का खतरा रहता है। इसमें खून से सनी हुई बीच पतली आती है। कॉक्सी डियोस्टैट दवा पानी के साथ दें।

पेट के कीड़ों की रोकथाम के लिए महीने में एक बार पेट के कीड़े की दवा जरूर दें। अन्यथा पक्षियों का शारीरिक विकास रुक जाता है। खाए गए अन्य का भक्षण परजीवी कर जाते हैं।

उम्र के अनुरूप दाना-

1.1 दिन से 7 हफ्ते तक चिकमैश दाना

2.8 से 20 हफ्ते तक ग्रोअर मैश

3.21 से 72 हफ्ते तक लेयर मैश 4.ब्रायलर का टीकाकरण

5.1 दिन मैरेक्स पंजे के स्नायु में

6.5 दिन लासोटा नाक में बूंद डालना 7.12 दिन गमबोरी आंखों में बूंद डालना

8.42 दिन देवी का टीका पंख के नीचे जिसमें मैं चुभाएं

9.48 दिन अरबी टीका पंख के भीतरी हिस्से में दें।

एक गाय 30 एकड़ खेती को देगी खाद

एक गाय के गोबर और गौमूत्र से 30 एकड़ जमीन के लिए खाद तैयार किया जा सकता है। श्रेष्ठ प्राकृतिक उत्पादन लिया जा सकता है। उत्पाद की बाजिव कीमत मिलने और उपज में गिरावट के बाद भी आधुनिक खेती से मुकाबले पैसा मिल सकता है। उपभोक्ताओं को भी रसायन मुक्त सस्ते खाद्य उत्पाद मुहैया कराए जा सकते हैं। जैविक एवं प्राकृतिक खेती जैसे विचार इसी दिशा में काम को आगे बढ़ा रहे हैं।

अब पंजाब के बाद आधुनिक खेती के मामले में अग्रणी राज्य हरियाणा के हर गांव में प्राकृतिक खेती की दिशा में अलख जगाने का काम तेज हो गया है। जीरो बजट खेती के जनक और प्रयोगधर्मी सुभाष पालेकर को हरियाणा बुलाकर विशेष प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने की तैयारी सरकार ने कर ली है। प्रशिक्षण शिविर में महिलाओं की 50 फीसदी भागीदारी रहेगी। इसके लिए सरकार ने गुजरात के खेडा जिले में एक दल को भेजकर प्राकृतिक खेती के विचार की हकीकत जानकर सुझाव मांगे थे। इस पर दल द्वारा सहमति जताने के बाद यह कदम बढ़ाया गया है। कृषि मंत्री जेपी दलाल की विशेष दिलचस्पी के चलते विभाग ने इसकी विस्तृत कार्ययोजना तैयार की है।

प्राकृतिक खेती में एक गाय से 30 एकड़ खेत को जैविक खाद मिल सकती है इसके अलावा खेत में लगने वाले पानी को भी 70 फीसदी तक बचाया जा सकता है। गाय के गोबर और गौमूत्र का उपयोग करने से खेतों की जलधारण क्षमता बढ़ जाती है। जमीन पानी कम सोखती है। यदि सोखती भी है तो वह जल्दी से सूखता नहीं है। हरियाणा के कई इलाकों में जल स्तर 20 मीटर से भी ज्यादा नीचे चला गया है। प्राकृतिक खेती से इसकी गिरावट भी रुकेगी।

हर गांव में होगा एक मास्टर ट्रेनर-
इस परियोजना को परवान चढ़ाने के लिए छोटी जोत वाले किसान, युवा और महिलाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। हर गांव में एक मास्टर ट्रेनर तैयार किया जाएगा ताकि वह इस काम को गांव में रहकर ही सही तरीके से अंजाम दिला सके। हरियाणा में करीब 36 लाख हेक्टेयर में खेती की जाती है। इसमें बहुत कम एरिया में ही जैविक खेती होती है।
सरकार की रुचि के मद्दे नजर अफसर भी इस दिशा में तेजी दिखा रहे हैं। वह इस काम को मूर्तरूप् देने वाले हर बिन्दु पर काम कर रहे हैं।

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन की संपूर्ण जानकारी

आजकल खेती भी पूरी तरह से मशीन पर निर्भर हो गई है. जैसे हम देख रहे हैं की पहले समय में लोग जो काम अपने शरीर की मेहनत से करते थे वो सभी काम आज मशीन से होने लगे हैं। फिर चाहे खेत की तैयारी हो, माझा हो, खेत को लेवल करना हो, बुबाई करनी हो या फिर फसल की कटाई करनी हो. आप कह सकते हैं कि फसल की बुवाई से लेकर फसल को घर तक लाने के सभी काम मशीन से होने लगे है।

आज हम कंबाइन हार्वेस्टर मशीन की बात करते हैं कि कैसे इसने हमारी मजदूरों पर निर्भरता काम कर दी है।

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन न होती तो हम अपने खेतों की फसल को समय से घर न ला पाते और न ही इसको समय से बाजार में पंहुचा पाते। इस कंबाइन हार्वेस्टर मशीन ने हमारी मजदूरों पर निर्भरता काफी हद तक कम कर दी है. आइये जानते हैं इसकी उपलब्धता के बारे में और कौन-कौन सी कंपनी इसका निर्माण करती हैं।

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन के प्रकार:-
कंबाइन हार्वेस्टर मशीन दो तरह की होती हैं.

1- ट्रैक्टर चालित मशीन

2- कंबाइन हार्वेस्टर मशीन
बुवाई के

1- ट्रैक्टर निर्मित या चालित मशीन:-
जो बड़े किसान होते हैं उनके पास सामान्यतः बड़े ट्रैक्टर होते हैं जो की उनके बड़े काम आसानी से कर सकें इन्हीं ट्रैक्टर्स को वो कंबाइन हार्वेस्टर मशीन चलाने में करते है। जब तक फसल को तैयार करने के लिए जो काम ट्रेक्टर से करने होते हैं उसे करने के बाद उसी ट्रैक्टर को कंबाइन हार्वेस्टर मशीन चलाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। जब आपकी फसल कट जाये उसके बाद आप ट्रेक्टर को नीचे उतार कर ट्रैक्टर की तरह प्रयोग में ला सकते हैं.नीचे दिए चित्र में देखें:

2- स्वचालित कंबाइन हार्वेस्टर मशीन:-
ये मशीन आती ही इसी काम के लिए हैं इनमे ट्रैक्टर नहीं लगा होता है इसका इंजन सिर्फ कंबाइन हार्वेस्टर मशीन के लिए ही बनाये जाते हैं तथा इनका फसल कटने के बाद अगली फसल आने तक कोई भी काम नहीं होता।

आजकल सभी बड़ी कंपनियां कंबाइन हार्वेस्टर मशीन बनाते हैं जिनमे, 1) हिन्द एग्रो हार्वेस्टर, 2) प्रीत हार्वेस्टर, 3) क्लास हार्वेस्टर, 4) केएस ग्रुप हार्वेस्टर, 5) एग्रीस्टार हार्वेस्टर, 6) न्यू हिन्द हार्वेस्टर, 7) स्वराज, 8) इंडो फार्म हार्वेस्टर, 9) मलकीत एग्रो इंडस, 10) शक्तिमान हार्वेस्टर, 11) ऐस हार्वेस्टर, 12) न्यूहॉलैंड, 13) करतार, 14) गोमसेलमष, 15) दसमेश आदि।

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन का कार्य

इस मशीन की सहायता से किसान गेंहू, सरसों, धान, सोयाबीन आदि फसलों को काट कर दाने अलग करता है. इसके अंदर स्टोरेज क्षमता भी होती है जो कि भर जाने पर चालक को टंकी भर जाने का अपडेट देती है जिससे कि उसको खाली करके दुबारा से काम स्टार्ट किया जा सके।

कंबाइन हार्वेस्टर की रील खड़ी फसल को काटने वाली यूनिट तक पहुंचाती है। कटर बार के अंदर बड़े-बड़े चाकू जैसे बहुत ही तेज धारदार ब्लैड होते हैं जिनसे वो खड़ी फसल को काटता है। इसके बाद फसल कन्वेयर बेल्ट के जरिए रेसिंग यूनिट में जाती है। यहां पर फसल के दाने ड्रेसिंग ड्रम और कंक्रीट क्लीयरेंस से रगड़ने पर अलग हो जाते हैं। इसके साथ ही बड़े-बड़े छटना के द्वारा अनाज साफ हो जाता है और ब्लोवर से भूसा या तूरा अलग हो जाता है. इस मशीन में एक स्टोन ट्रैप यूनिट लगी होती है, जो कि फसल के साथ आने वाले कंकड़, मिट्टी आदि को अलग कर देता है।

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन की उपयोगिता:

यह मशीन किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। इसकी मदद से किसान को मजदूर न मिलने पर मशीन से काम किया जाता है और कम से कम 10 से 15 दिन पहले ही किसान अपनी फसल को बाजार , मंडी में ले जाकर बेच सकता है। इससे अनाज को अलग करके तूरा और भूसा को खेत में खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है। जिससे कि खेत की उर्वरकता बानी रहती है. इससे खेत में गिरी हुई फसल को भी काटा जा सकता है।

प्रदूषण रोकने के लिए जरूरी है स्ट्रा रीपर वाली मशीन:

सरकार ने इससे होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए इसके साथ स्ट्रा रीपर लगाना जरूरी कर दिया है बिना स्ट्रा रीपर की मशीन को सीज कर दिया जायेगा।

क्या काम करता है स्ट्रा रीपर:

स्ट्रा रीपर एक कृषि यंत्र है, यह हार्वेस्टिंग मशीन में लगाया जाता है. इससे धान, गेंहू, सरसों आदि फसलों की कटाई के बाद बचने वाले अवशेष छोटे-छोटे टुकड़ों में कट जाते हैं, जो कि जलाने में मुश्किल होते हैं और खेत की जुताई के समय मिट्टी में ही मिल जाते हैं. इससे प्रदूषण की समस्या नहीं होती और किसान के खेत में खाद का काम भी यही अवशेष करते हैं.

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन के नुकसान:

प्रौद्योगिकी एक महान नौकर है, लेकिन एक बुरा स्वामी है। कंबाइन हार्वेस्टर मशीन के कुछ नुकसान भी हैं अगर हम उसका सही से उपयोग न करें तो इससे खेत को फसलों के अवशेष ज्यादा होने की वजह से किसान समय से अगली फसल की तैयारी समय से नहीं कर पाता है। उसको नष्ट करने के लिए किसान को ज्यादा जोत लगानी पड़ती हैं जिससे की किसान का खर्चा ज्यादा आता है, दूसरा अगर इसमें आग लगा दी जाये तो इससे पर्यावरण को नुकसान होता है तथा सरकार पराली जलाने को लेकर बहुत सख्त है।

कैसे खरीदें कंबाइन हार्वेस्टर:

कंबाइन हार्वेस्टर को खरीदने के दो तरीके हैं पहला आप किसी भी कंपनी से सीधे इसे खरीद सकते हैं या सरकार द्वारा दी गई अनुदान की स्कीम से भी इसे ले सकते हैं. अनुदान से मिलना आसान नहीं है क्यों कि यह बहुत ही मॅंहगा यन्त्र है तो हर कोई इसको खरीद नहीं पता है. ज्यादातर किसान किराये पर लेकर ही अपनी फसल इससे कटवाते हैं. इस वजह से कई बार किसानों को अपना नंबर आने के लिए कई कई दिन तक इन्तजार करना पड़ता है और कई बार इससे फसल ज्यादा पक जाने कि वजह से खेत में ही झड़ जाती हैद्य

अनुदान देने के लिए सरकार अपनी तरफ से कोशिश कराती है कि सही पात्र को इसका फायदा मिले लेकिन इसमें भी कुछ लोग खेल कर जाते हैं और जो सरकार का रजिस्ट्रेशन पोर्टल है वो समय पर खुल ही नहीं पता है. किसानों को पता ही नहीं चलता और इसका अनुदान किसी खास आदमी को मिल जाता है।

सब्सिडी पाने के लिए अपने जिले के कृषि अधिकारी से संपर्क में रहें जिससे की जब भी किसी यन्त्र पर सब्सिडी आती है तो आपको पता चल सके।

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन की कीमत:

कंबाइन हार्वेस्टर मशीन की रेट 15 लाख से लेकर 40 – 45 लाख तक जाते हैं. इसकी कीमत इसके फीचर पर निर्भर करता है. जिस मशीन की ब्लेड ज्यादा बड़ा होगा वो काम समय में ज्यादा फसल की कटाई कर सकता है। इससे भी कीमत बढ जाती है। आप हमारे एक्सपर्ट्स से भी इसकी कीमत और फीचर्स के बारे में पूछ सकते है।

मेरीखेती वेबसाइट का उद्देश्य अपने किसान भाइयों को ज्यादा से ज्यादा और सटीक जानकारी देना है।

कृषि यत्रों के लिए लोन कैसे लें: भारतीय स्टेट बैंक कृषि यत्रों के लिए लोन भी देती है. क्यों की ये सरकारी बैंक है तो आपको किसी भी तरह की छुपी हुई शर्तो से नहीं डरना है. प्राइवेट बैंकों की तरह इनकी कोई छुपी हुई शर्ते नहीं होती हैं. आपको नीचे स्टेट बैंक का लोन की अप्लाई के लिए लिंक भी दिया जा रहा है. जिससे आप ऑनलाइन भी लोन की प्रक्रिया देख सकते हैं।

बगैर पराली हटाए करे बिजाई हैप्पी सीडर

इस मशीन का प्रयोग धान के खेतों में पराली के खेत में बिछे होने के दौरान बगैर जुताई के बिजाई करने में किया जाता है। इसकी कीमत एक लाख 60 हजार के करीब है। खेत में मल्चर चलने के बाद यह मशीन धान के ठूंठ आदि को बीज डालने वाले स्थान के सामने से पुआल को कतरती रहती है और साथ के साथ बीज भी बोती जाती है। इस मशीन के उपयोग से खेत की जुताई का खर्चा बचने के साथ समय से बिजाई हो पाती है। जमीन की नमी भी इस प्रक्रिया को अपनाने से बनी रहती है। अंकुरण बेहद अच्छा होता है।

हैप्पी सीड़र से बुवाई करने का सबसे अहम लाभ खेत में खरपतवार न उगने, फसल को कम्पोस्ट खाद मिलने तथा उत्पादन बढ़ने के रूप में सामने आत हैं। धान की पराली के प्रबंधन का इससे अच्छा कोई दूसरा माध्यम होही नहीं सकता। इस मशीन को रोटाबेर चलने लायक अश्व शक्ति वाले किसी भी कंपनी के ट्रक्टर से चलाया जा सकता है। धान उत्पादक इलाकों में पराली प्रबंधन से जुड़ी इन मशीनों खरीदने के लिए 90 फीसदी तक अनुदान की व्यवस्था हर राज्य में है। केन्द्र सरकार के सहयोग से संचालित इस योजना का लाभ किसान व्यक्तिगत एवं समूह बनाकर ले सकते हैं। जिन इलाकों में कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से मशीन लेजाकर प्रयोग की गई है वहां सरकार की ओर से किसानों को आर्थिक मदद भी प्रदान की गई है।

टमाटर की लाली लाएगी खुशहाली

आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी किसान ने एक एकड़ जमीन के आधे हिस्से में टमाटर की खेती और आधे में अपने परिवार के लिए गेहूं आदि फसलें उगाकर अपनी सात बेटियों की शादी तो करदी, बाकी जिम्मेदारियां भी बखूबी निभाई। आज हम उस किसान की सफलता की कहानी का जिक्र इस लिए कर रहे हैं ताकि आपको टमाटर की लाली का एहसास हो सके। टमाटर की संकर यानी हाइब्रिड एवं मुक्त परागित सामान्य किस्में बाजार में मौजूद हैं। सामान्य किस्मों का छिलका पताला एवं इनमें रस व खटास ज्यादा होती है। इसके अलावा हाइब्रिड किस्मों में गूदा ज्यादा व छिलका मोटा होता है। मोटे छिलके वाली किस्में ट्रांसपोर्ट के लिहाज से ज्यादा अच्छी रहती हैं। हाइब्रिड किस्मों को कई दिन तक सामान्य तापमान में भी सुरक्षित रखा जा सकता है।

बुवाई का समय :- उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में टमाटर की दो फसलें ली जाती हैं। एक फसल जून जुलाई में नर्सरी डालकर 25 दिन बाद पौध रोपी जाती है। इससे अक्टूबर नवंबर में फल मिलने लगते हैं। उधर अक्टूबर माह में तैयार पौध से रोपित पौधों से जनवरी से अप्रैल तक फल प्राप्त होते हैं। हाइब्रिड किस्मों को ठंड के सीजन में लगाना श्रेयस्कर रहता है।

खेत की तैयारी:-टमाटर को हर तरह की जमीन में लगाया जा सकता है। टमाटर की खेती बैड बनाकर करने से फलों के खराब होने की आशंका नहीं रहती। आखिरी जुताई में 25 से 30 टन सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाएं। इसके अलावा रासायानिक उर्वरकों में 150 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टेयर मिट्टी में मिलाएं। इसके बाद खेत में बैड तैयार करें। बैड पौध के लगाने लायक होने पर ही तैयार करें

नर्सरी डालना:-पौधे तैयार करने के लिए नर्सरी डालने के लिए चार से छह इंच ऊंची क्यारी बनाते हैं। लम्बाई जरूरत के हिसाब से तथा चौड़ाई एक मीटर रखते हैं ताकि पौध की क्यारी के दोनों तरफ बैठकर खरपतवार आदि को निकाला जा सके। क्यारी में सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाते हैं। बीज को फफूदंनाशनक कार्बन्डा जिम, बाबस्टीय या ट्राईकोडर्मा में से किसी एक से उपचारित कर लेना चाहिए। बैड में यदि डिबलर हो तो डेढ़ से दो सेण्टीमीटर गहरे गड्ढे बनाकर बराबर दूरी व लाइन में बीज को डालना चहिए। इसके बाद जालीदार चलने से गोबर सड़ी और भुरभुरी खाद को क्यारी के समूचे हिस्से पर छान देना चाहिए। तदोपरांत क्यारी को जूट की बोरी या पुआल आदि से ढक दें। हर दिन क्यारी पर हजारा से हल्का पानी नमी बनाए रखने लायक देते रहें। पांच छह दिन में बीजों में अंकुरण हो जाएगा। पाधों के एक हफ्ते का हो जाने पर एम 45, बाबस्टीन आदि दवा की दो ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से पौध पर छिड़काव करें। संकर किस्मों में पत्तों में सुरंग बनने जैसे लक्षण दिखें तो मोनोक्रोटोफास दवा की दो एमएल मात्रा एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

पौधों को खेत में रोपना:-
जब पौधों में पांच से छह पत्ते निकल आएं और लम्बाई 15 से 20 सेण्टीमीटर की हो जाए तो रोपने की तैयारी करनी चाहिए। खेत में डेढ़ से दो फीट चौड़े बैड बनाएं। बैड की बगल में नाली हो । पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 एवं पौधे से पौधे की दूरी 45 सेण्टीमीटर रखनी चाहिए। ज्यादा विकास करने वाली किस्मों के लिए दूरी को और बढ़ाया जा सकता है।

सिंचाई:- पहली सिंचाई रोपण के बाद की जाती है। इसके बाद जरूरत होने पर सिंचाई करें।

साथ में लगाएं बेबीकार्न:- टमाटर को कार्बन की बेहद आवश्यकता होती है और मक्का कार्बन का सबसे ज्यादा उत्सर्जन करती है। टमाटर जब खेत में रोप दिए जाएं तो 20 से 25 दिन बाद टमाटर के बीज बीच में बेकीकार्न का बीज लगादें। बीज पानी लगाने से पहले लगाएं। इसका लाभ यह होगा कि टमाटर की लागत को निकालने लायक आय बेबीकर्न से हो जाएगी। इसके अलावा टकाटर की फसल को मक्का कार्बन प्रदान करेगी। इससे फलों की संख्या, ताजगी व गुणवत्ता बेहद अच्छी रहेगी।

जानिए मूली की खेती कैसे करें

मूली की खेती पूरे भारत वर्ष में की जाती है. इसकी खेती मैदानी इलाकों के साथ साथ पहाड़ी इलाकों में भी की जाती है. मूली को सलाद, सब्जी , अचार के रूप में प्रयुक्त किया जाता है. इसको खाने से मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा रहता है. कहते हैं ना की स्वस्थ शरीर ही पहला सुख होता है. अगर आपका शरीर स्वस्थ नहीं है तो आपके पास कितनी भी धन दौलत हो आप उनका सुख नहीं भोग सकते हो.तो ईश्वर ने हमें सब्जियों के रूप में ऐसी ओषधियाँ दी है जिनको खाने से हम अपना शरीर बिलकुल स्वस्थ्य रख सकते हैं.

इन्हीं सब्जियों में मूली भी एक सब्जी है. मूली एक जड़ वाली सब्जी है इसमें विटामिन सी एवं खनीज तत्व का अच्छा स्त्रोत हैद्य मूली लिवर एवं पीलिया मरीजों के लिए भी अच्छी बताई गई है. वैसे तो मूली वर्षभर उपयोग में ली जाती है किन्तु मूली को सर्दियों में ज्यादा प्रयोग में लाया जाता है. इसके पत्तों की सब्जी बनाई जाती है एवं इसके जड़ वाले हिस्से की सब्जी, सलाद, अचार और पराठा भी बनाया जाता है

जो मैदानी व पहाड़ी इलाको में पूरे साल उगाई जा सकती हैद्य इस लेख में मूली की उन्नत किस्मों की विशेषताएं और पैदावार की जानकारी का उल्लेख किया गया हैद्य मूली की खेती की विस्तृत जानकारी के लिए यहाँ पढ़ें- मूली की उन्नत खेती कैसे करें

मूली की उन्नत किस्में एवं कुछ एशियन किस्में:-मूली की कुछ किस्में ऐसी हैं जो की भारत के साथ साथ पड़ोस के और सामान वातावरण वाले देशों में भी उगाई जाती है. विवरण निचे दिया गया है।

खेत की तैयारी:-

जब हम मूली के लिए खेत की तैयारी करते हैं तो सबसे पहले हम उस खेत को गहरे वाले हल से जुताई करते हैं उसके बाद उसको कल्टीवेटर से 3 द्व 4 जुताई करके हलका पाटा लगा देते हैं. इसकी बुबाई अगर बेड बना करें तो ज्यादा सही रहता है. ये एक जड़ वाली फसल है तो इसको गहराई वाली और फोक मिटटी की आवश्यकता होती है. इसमें गोबर के खाद की मात्रा अच्छी खासी होनी चाहिए

मूली की उन्नत किस्में:-

मूली की फसल लेने के लिए ऐसी उन्नत किस्मों का चयन करना चाहिए, जो देखने में सुंदर व खाने में स्वादिष्ट हो, साथ ही अपने क्षेत्र की प्रचलित और अधिक पैदावार देने वाली होनी चाहिएद्य मूली की खेती मैदानी इलाकों में सितंबर से जनवरी तक और पहाड़ी इलाकों में मार्च से अगस्त तक आसानी से की जा सकती हैद्य वैसे मूली की तमाम ऐसी एशियन और यूरोपियन किस्में उपलब्ध हैं,?

जापानी सफेद :-इस किस्म की जड़ें सफेद लम्बी 15 से 22 सेंटीमीटर बेलनाकार, कम तीखी मुलायम और चिकनी होती हैद्य जड़ों का नीचे का भाग कुछ खोखला होता है इसकी बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अक्तूबर से 15 दिसंबर तक है बोने के 45 से 55 दिन बाद फसल खुदाई के लिए तैयार और पैदावार क्षमता 250 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है।

पूसा हिमानी :-इस मूली की किस्म की जड़े 30 से 35 सेंटीमीटर लम्बी, मोटी, तीखी, अंतिम छोर गोल नहीं होते, सफेद एवं टोप हरे होते है हल्का तीखा स्वाद और मीठा फ्लेवर, बोने के 50 से 60 दिन में परिपक्व, दिसम्बर से फरवरी में तैयार और औसत पैदावार 320 से 350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त होती है।

पूसा रेशमी :- इसकी जड़ें 30 से 35 सेंटीमीटर लम्बी , मध्यम मोटाई वाली, लेकिन उपरी सिरे वाली, समान रूप से चिकनी और हलकी तीखी होती है उपरी भाग मध्यम ऊंचाई वाला और हलके हरे रंग कि कटावदार पतियों वाला होता हैद्य यह किस्म मध्य सितम्बर से अक्टूम्बर तक बुवाई के लिए उपयुक्त है बोने के 55 से 60 दिन बाद तैयार और उपज क्षमता 315 से 350 प्रति हेक्टेयर है।

पूसा चेतकी:-डेनमार्क जनन द्रव्य से चयनित यह किस्म पूर्णतया सफेद, मूसली, नरम, मुलायम, ग्रीष्म ऋतु की फसल में कम तीखी जड़ 15 से 22 सेंटीमीटर लम्बी, मोटी जड़, पत्तियां थोड़ी कटी हुई, गहरा हरा एवं उर्ध्वमुखी, 40 से 50 दिनों में तैयार, ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु हेतु उपयुक्त फसल (अप्रैल से अगस्त) और औसत पैदावार 250 से 270 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

जौनपुरी मूली :- यह उत्तर प्रदेश कि प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय किस्म हैद्य यह 70 से 100 सेंटीमीटर लम्बी और 7 से 10 सेंटीमीटर मोटी होती हैद्य इस किस्म का छिलका और गुदा सफेद होता हैद्य गुदा मुलायम, कम चरपरा और मीठा होता है।

हिसार मूली न 1 :- इस मूली की उन्नत किस्म की जड़ें सीधी और लम्बी बढ़ने वाली होती है जड़ें सफेद रंग कि होती है, यह किस्म सितम्बर से अक्तूबर तक बोई जाती हैद्य यह किस्म बोने के 50 से 55 दिन बाद खुदाई के लिए तैयार हो जाती हैद्य यह प्रति हेक्टेयर 225 से 250 क्विंटल तक उपज दे देती है।

कल्याणपुर 1 :- इस मूली की उन्नत किस्म की जड़ें सफेद चिकनी मुलायम और मध्यम लम्बी होती हैद्य बोने के 40 से 45 दिन बाद यह खुदाइ के लिए तैयार हो जाती है।

पूसा देशी :- इस मूली की किस्म कि जड़ें सफेद, मध्यम, मोटी 30 से 35 सेंटीमीटर लम्बी और बहुत चरपरी होती हैद्य इसकी जड़ें नीचे कि ओर पतली होती हैद्य पौधों का उपरी भाग मध्यम ऊंचाई वाला होता है और पत्तियां गहरे हरे रंग कि होती हैद्य यह मध्य अगस्त से अक्टूम्बर के आरंभ तक बुवाई के लिए उत्तम किस्म हैद्य यह बोने के 40 से 55 दिन बाद तैयार हो जाती है।

पंजाब पसंद :- यह जल्दी पकने वाली किस्म है, यह बिजाई के बाद 45 दिनों में कटाई के लिए तैयार होती हैंद्य इसकी जड़ें लम्बी, रंग में सफेद और बालों रहित होती हैद्य इसकी बिजाई मुख्य मौसम और बे-मौसम में भी की जा सकती हैद्य मुख्य मौसम में, इसकी औसतन पैदावार 215 से 235 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और बे-मौसम में 150 क्विंटल होती है

अन्य एशियन किस्में :- चाइनीज रोज, सकुरा जमा, व्हाईट लौंग, के एन- 1, पंजाब अगेती और पंजाब सफेद आदि हैद्य ये किस्में भी अच्छी पैदावार वाली और आकर्षक है

यूरोपियन किस्में :-

व्हाईट आइसीकिल- यह मूली की किस्म ठंडी जलवायु के लिए उपयुक्त हैद्य इसकी जड़ें सफेद, पतली कम चरपरी और स्वादिष्ट होती हैद्य इसकी जड़ें सीधी बढ़ने वाली होती है जो नीचे के ओर पतली होती जाती हैद्य इसे खेत में लम्बे समय तक रखने पर भी

इसकी जड़ें खाने योग्य बनी रहती है इसे 15 अक्टूम्बर से फरवरी तक कभी भी बो सकते हैंघ इस किस्म कि मुली बोने के करीब 30 दिन बाद तैयार हो जाती है।

रैपिड रेड व्हाईट टिपड :-
इस किस्म कि मूली का छिलका लाल रंग का होता हैंघ जो थोड़ी सी सफेदी लिए होता हैंघ जिसके कारण मुली देखने में अत्यंत आकर्षक लगती है इसकी जड़ें छोटे आकार वाली होती है और उनका गुदा सफेद रंग का होता है तथा मुली कम चरपरी होती है इस किस्म कि बुवाई मध्य अक्टूम्बर से फरवरी तक कभी भी कि जा सकती हैंघ इस किस्म कि मुली बोने के लगभग 25 से 30 दिन बाद तैयार हो जाती है।

स्कारलेटग्लोब :- यह मूली की अगेती किस्म है, जो बोने के 25से 30 दिन बाद तैयार हो जाती है। इसकी जड़ें छोटी मुलायम और ग्लोब के आकार वाली होती हैंघ इसकी जड़ें खाने में अत्यंत स्वादिष्ट लगती है।

फ्रेंच ब्रेकफास्टं:-यह भी मूली की एक अगेती किस्म है, यह किस्म बुवाई के 27 दिन बाद खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। जड़ें बड़े आकार में छोटी, मुलायम, गोलाकार तथा कम चरपरी होती हैंघ जो खाने में अत्यंत स्वादिष्ट लगती है।

मूली के बीज बनाने के
तरीकें:-इसके अच्छे और तंदुरुस्त पौधों को चुन कर उसे पकने के लिए छोड़ देना चाहिए. जब ये पक जाएँ तो इन्हें काट कर अच्छे से सुखा लेना चाहिए. इसके बीजों को किसी सूखी हुई जगह पर रख लेना चाहिए.

हरियाणा सरकार का किसानों को लघु सिंचाई का तोहफा

हरियाणा सरकार माइक्रो इरीगेशन पर एक विशेष तोहफा अपने राज्य के किसानों को दे रही है। इस योजना के अमल में आने से किसानों को कम पानी में अपनी फसलें उगाने में सफलता मिलेगी। इस योजना में किसान अकेले और समूह में बनाकर किसी भी तरह लाभ ले सकते हैं। शूक्ष्म सिंचाई प्रणाली का लाभ उठाने वाले किसानों के लिए सरकार ने एक पोर्टल भी बनाया है ताकि किसानों को योजना के लाभ के लिए किसी तरह की दिक्कत का सामना न करना पड़े।

इस योजना में लाभ लेने वाले पंजीकृत किसानों को पोर्टल पर अपना पंजीकरण अकेले या समूह में करना होगा। वह शूक्ष्म सिंचाई, सोलर सिस्टम, पानी के लिए टेंक निर्माण आदि का कार्य करा सकेंगे।
हरियाणा सरकार की प्रेस विज्ञाप्ति के अनुसार अकेले किसान को टेंक निर्माण के लिए 70 प्रतिशत, सोलर पंप पर 75 प्रतिशत, मिनी स्प्रिंकलर पर 85 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। इस कार्य को किसानों द्वारा समूह बनाकर किए जाने पर सोलर पंप पर 75 प्रतिशत व बाकी मदों में 85 प्रतिशत छूट दी जाएगी।

पानी एकत्र करने वाले टेंक की खुदाई पूरी होने पर 20 प्रतिशत, निर्माण पूरा होने पर 40 प्रतिशत छूट प्रदान कर दी जाएगी। बाकी छूट शूक्ष्म सिंचाई सिस्टम स्थापित होने पर प्रदान किया जाएगा। 25 एकड़ जमीन पर सूक्ष्म सिंचाई के लिए 'ऑन फार्म पॉन्ड' के लिए 2 कनाल जमीन चाहिए। इसके निर्माण की 99 प्रतिशत लागत सरकार वहन करेगी। हिस्सेदार को एक प्रतिशत राशि जमा करानी होगी।

प्याज भंडारण को लेकर सरकार लाई सौगात, मिल रहा है 50 फीसदी अनुदान

देश में फसल उत्पादन के बाद उसे सुरक्षित भंडारण की बहुत बड़ी समस्या है। इस समस्या के कारण भारी मात्रा में फसल खराब हो जाती है। सरकार ने इस समस्या का समाधान निकालते हुए किसानों को सुरक्षित भंडारण के लिए प्रोत्साहित किया और उसके लिए एक योजना बनायी है। इस योजना के तहत सरकार ने किसानों को प्याज के भंडार गृह बनाने के लिए 50 प्रतिशत अनुदान यानी सब्सिडी देने की योजना चलायी है। इस बारे में जानकारी जुटाकर किसान भाई लाभ उठा सकते हैं। आइये जानते हैं कि किसान भाई किस प्रकार इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

प्याज भंडार गृह न होने से होता है किसानों का नुकसान:-

हमारे देश के महाराष्ट्र के नासिक और राजस्थान के अलवर जिले में सबसे अच्छी प्याज उगाई जाती है। इसकी पैदावार भी अच्छी होती है लेकिन उचित भंडारण के कारण किसान भाई अपनी फसल को सुरक्षित नहीं रख पाते हैं। इसलिये अधिकांश किसान भाई अपनी फसल को औने-पौने दामों में ही बेच डालते हैं। इससे उनकी आमदनी पर काफी असर पड़ता है।

सरकार ने किसानों से मांगे आवेदन पत्र :- इस समस्या को देखते हुए मध्य प्रदेश की सरकार ने अपने किसानों को उनकी प्याज की फसल के उचित मूल्य दिलाने के लिए प्याज के भंडार गृह बनाने में 50 प्रतिशत अनुदान देने की घोषणा की है। मध्य प्रदेश सरकार के उद्यानिकी विभाग ने राज्य के चयनित जिलों से किसानों से प्याज भंडार गृह के निर्माण हेतु आवेदन पत्र मांगे हैं।

सब्सिडी पाने के लिए कुछ आवश्यक नियम :-

मध्य प्रदेश सरकार की ओर से जारी इस योजना में राज्य के किसानों के लिए कुछ शर्तें भी रखी गयीं हैं। इन शर्तों को पूरा करने वाले किसान को ही सब्सिडी का लाभ मिल सकता है। आइये जानते हैं कौन-कौन सी हैं शर्तें:-

1.आवेदन करने वाले किसान को कम से कम 2 हेक्टेयर भूमि में प्याज का उत्पादन करना आवश्यक है। इसके साथ ही खेत में बनाये गये इस भंडार का उपयोग प्याज के अलावा किसी दूसरी वस्तु के लिये नहीं किया जायेगा।

2.प्याज भंडार गृह का निर्माण सरकार द्वारा अधिसूचित संस्थान एनएचआरडीएफ की डिजाईन के अनुसार व निर्धारित मानकों के अनुरूप होना चाहिये।

3.प्याज भंडारण की क्षमता 50 मीट्रिक टन तक होगी।

4.आवेदक पूर्व में किसी अन्य योजना में प्याज भंडार गृह के अंतर्गत लाभ न ले रहा हो।

5.योजना की निष्पक्षता के लिए सरकान ने आदेश दिये हैं कि चयनित जिले के उपसहायक संचालक उद्यान विभाग द्वारा लाभार्थी किसानों की अनुदान स्वीकृति सूची विभागीय वेबसाइट http://mphorticulture.gov.in/hi/ पर उपलब्ध करायी जायेगी।

6.प्याज भंडार के निर्माण के समय योजना को लागू करने के लिए ग्रामीण उद्यान विस्तार अधिकारी और वरिष्ठ उद्यान विकास अधिकारी समय समय पर भंडार गृह का निरीक्षण करेंगे तथा जरूरत पड़ने पर किसानों को तकनीकी सलाह भी देंगे।

7.किसान ने इस निर्माण के संबंध में परामर्शीय सेवा देने के उपरांत जियो टैगिंग की कार्यवाही भी करेंगे लेकिन इस कार्यवाही के दौरान लाभार्थी किसान का उपस्थित होना अनिवाय है।

8.उद्यान विभाग के संभागीय संयुक्त संचालक भी प्याज भंडार गृह के दस प्रतिशत हिस्से का निरीक्षण कर सत्यापन करेंगे और इसकी रिपोर्ट भी तैयार करेंगे।

कौन आवेदन कर सकता है:-

सरकार ने अपनी योजना के पहले चरण में कुछ ही जिलों का चयन किया है। सरकार द्वारा चयनित जिलों के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के किसान ही अभी आवेदन कर पाऐंगे। इसके अलावा सामान्य या पिछड़े वर्ग के किसान अभी आवेदन नहीं कर सकते हैं। योजना के अगले चरण में अन्य वर्ग के किसानों के आवेदन पर विचार किया जायेगा।

कैसे मिलेगा सब्सिडी का लाभ:-

सरकार ने यह नियम बनाया है कि कृषकों द्वारा बनाये गये प्याज भंडार गृह का पूरी तरह से भौतिक सत्यापन किया जायेगा। यह जांच पड़ताल जिले के उप-सहायक संचालक उद्यान विभाग की अध्यक्षता में बनी तीन सदस्यीय समिति करेगी।

इस समिति के मूल्यांकन और भौतिक सत्यापन के बाद जो सिफारिश की जायेगी उसके आधार पर किसान को अनुदान की राशि का भुगतान एमपी एग्रो द्वारा डी.बी.टी . के जरिये किया जायेगा। जो किसानों के बैंक खातों में सीधा जायेगा।

सब्सिडी के लिए किसान भाई कहां करें आवेदन:- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा घोषित प्याज भंडारण की योजना का लाभ राज्य का उद्यानिकी विभाग उपलब्ध करायेगा। इसलिये आवेदन करने वाले इच्छुक किसान भाई अपना ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन उद्यानिकी विभाग की वेबसाइट **https://mpfsts-mp-gov-in/** पर कर सकते हैं। इस आवेदन को राज्य के उद्यान विभाग के अधिकारियों द्वारा 15 दिन में स्वीकृति दी जायेगी। अधि‍कारियों द्वारा यदि कोई कमी नहीं बताई गयी तो लाभार्थी का चयन पूर्ण माना जायेगा।

कितने रुपये तक की मिल सकती है सब्सिडी:- प्याज भंडार गृह निर्माण पर सब्सिडी की योजना मध्य प्रदेश सरकार की पोषित योजना है। इसलिये किसानों को इस योजना के तहत सब्सिडी देने की जिम्मेदारी राज्य के उद्यानिकी विभाग की है। इस योजना के तहत लाभार्थी किसानों को प्याज भंडार गृह के निर्माण पर 50 प्रतिशत तक की सब्सिडी दिये जाने का प्रावधान है। मध्य प्रदेश राज्य के उद्यानिकी विभाग की ओर से प्याज के 50 मीट्रिक टन की भंडारण क्षमता वाले भंडार के निर्माण के लिए अधिकतम 3.5 लाख रुपये निर्धारित की गयी है। इसमें किसानों को लागत का अधिकतम 1.75 लाख रुपये की सब्सिडी दी जायेगी।

आवेदन के लिए बिलकुल देरी न करें किसान भाई:-

मध्य प्रदेश सरकार की प्याज भंडार गृह निर्माण की सब्सिडी योजना का लाभ उठाने के लिए किसान भाई कतई देर न करें और इसके लिए आवेदन 23 सि. तम्बर सुबह 11 बजे से करें

क्योंकि यह योजना पहले आओ पहले पाओ पर आधारित है। आवेदकों की संख्या सरकार द्वारा जिले को दिये गये लक्ष्य के अनुसार होगी। हालांकि सरकार ने जिले के उप व सह संचालक उद्यान विभाग को लक्ष्य से 10 प्रतिशत अधिक आवेदन लेने को कहा है।

प्याज भंडार गृह के लिए निर्धारित लक्ष्य:-

राज्य के एक पोर्टल द्वारा जारी किये गये लक्ष्य की सूचना के अनुसार अभी केवल अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के किसानों को ही आवेदन करने की यह सुविधा दी गयी है। इस योजना में अनुसूचित जाति के कुल 351 किसानों के आवे. दन का लक्ष्य जारी किया गया है। वहीं अनुसूचित जनजाति के लिए लक्ष्य 267 आवे. दकों का रखा गया है। इस लक्ष्य के अनुसार अनुसूचित जाति के 188 किसानों और अनुसूचित जनजाति के 266 किसानों को इस योजना का लाभ दिया जा सकता है। इसके साथ ही जो किसान भाई इस बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो वे राज्य सरकार की वेबसाइट https://mpfsts-mp-gov-in/mphd/#/new&application पर जाकर विवरण जानें। इसके अलावा किसान भाई राज्य के उद्यानिकी विभाग व खाद्य विभाग प्रसंस्करण विभाग पर भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही विकास खंड स्तर पर कार्यालय में भी संपर्क करके पूरी जानकारी पायी जा सकती है। राज्य सरकार के लक्ष्य के बारे में एक पोर्टल द्वारा दी जा रही सूचना के अनुसार कम से कम 454 किसानों को लाभ प्राप्त होगा। यदि इस योजना से लाभ प्राप्त करने वालें लाभार्थी किसानों की संख्या औसत रही तो इस योजना के विस्तार के बारे में भी विचार किया जा सकता है।

याज भंडार गृह के लिए निर्धारित लक्ष्य:-राज्य सरकार के लक्ष्य के बारे में एक पोर्टल द्वारा दी जा रही सूचना के अनुसार कम से कम 454 किसानों को लाभ प्राप्त होगा। यदि इस योजना से लाभ प्राप्त करने वालें लाभार्थी किसानों की संख्या औसत रही तो इस योजना के विस्तार के बारे में भी विचार किया जा सकता है।

जितना खेत, उतना मिलेगा यूरिया

जितना खेत, उतना मिलेगा यूरिया

अभी तक किसानों को यूंही मुंहमांगा यूरिया खाद देने वाले दुकानदारों के लिए परेशानी खडी होने लगी है। किसी भी एक किसान को एक से अधिक बार 20क्25 बैग देने वाले कारोबारियों को इस तरह के नोटिस जा रहे हैं। केन्द्र सरकार खाद की कालाबाजारी रोकने की दिशा में इस तरह के कदम उठा रही है लेकिन अब दुकानदार भी किसानों से आधार नंबर और खतौनी खाद खरीदने आते वक्त लेकर आने की बात कहने लगे हैं।

किसानों के लिए वरदान बनकर आया नैनो लिक्विड यूरिया :-

उल्लेखनीय है कि यूरिया एवं डीएपी आदि उर्वरकों को सरकार किसानों के लिए सस्ती दर पर मुहैया कराती है लेकिन कुछ उद्योगों में भी इसका दुरुपयोग होता था। इसे रोकने के लिए सरकार ने यूरिया को नीम लेपित कर दिया। इसके बाद कुछ समय के लिए उद्योगों में इसका दुरुपयोग रुक गया। इधर किसान भी अपनी फसलों में यूरिया का अंधाधुंध प्रयोग कर रहे हैं। यूरिया के अधिक उपयोग से अनाज की पोषण क्षमता के अलावा जमीन की उर्वराशक्ति पर भी प्रभाव पड़ रहा है। सरकार धीरे धीरे किसानों को भी यूरिया के उचित उपयोग की आदी बनाना चाहती है। इस क्रम में जिन किसानों के नाम एक से अधिक यूरिया के बैगों की ज्यादा संख्या दर्ज की गई है उनके आंकडों को जिला कृषि अधिकारियों के माध्यम से सत्यापित किया जा रहा है। दुकानदारों से स्पष्टीकरण मांगा गया है कि यूरिया के बैग बार-बार एक ही किसान को ज्यादा तादात में देने का मामला संज्ञान में आ रहा है। यदि फीडिंग में कोई गलती है या किसान बटाई आदि पर ज्यादा खेत करता है तो प्रमाण सहित उसका स्पष्टीकरण उन्हें देना पड़ेगा।

खेती की जमीन की पुष्टी के बाद मिलेगा खाद :-

अभी तक होता यह आया है कि परचून की दुकान की तरह दुकानदार किसानों को उनकी मांग के हिसाब से खाद देते रहे लेकिन अब यह हालात नहीं रहेंगे। अब वह किसानों से उनकी खेती योग्य जमीन का ब्यौरा मांगेंगे ताकि उन्हें पता चल सके कि किसान जमीन से ज्यादा खाद तो नहीं ले गया। इसके अलावा यदि बटाई पर खेत करता है तो किसका खेत करता है व कितना खेत करता है इसका भी विवरण लेंगे। किसान के नाम, पता व फोन नंबर भी रखेंगे ताकि यदि किसी तरह की दिक्कत होतो उन्हें बुलाकर स्पष्टीकरण दिया जा सके।

अरंडी की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

किसान भाइयों, अरंडी एक औषधीय वानस्पतिक तेल का उत्पादन करने वाली खरीफ की मुख्य व्यावसायिक फसल है। कम लागत में होने वाली अरंडी के तेल का व्यावसायिक महत्व होने के कारण इसको नकदी फसल भी कहा जा सकता है। किसान भाइयों अरंडी की फसल का आपको दोहरा लाभ मिल सकता है। इसकी फसल से पहले आप तेल निकाल कर बेच सकते हैं। उसके बाद बची हुई खली से खाद बना सकते हैं। इस तरह से आप अरंडी के खेती करके दोहरा लाभ कमा सकते हैं। आइये जानते हैं कि अरंडी की खेती कैसे की जाती है।

भूमि व जलवायु:-अरंडी की फसल के लिए दोमट व बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी होती है लेकिन इसकी फसल पीएच मान 5 से 6 वाली सभी प्रकार की मृदाओं में उगाई जा सकती है। अरंडी की फसल ऊसर व क्षारीय मृदा में नहीं की जा सकती। इसकी खेती के लिए खेत में जलनिकास की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिये अन्यथा फसल खराब हो सकती है।

जापानी सफेद :-अरंडी की खेती विभिन्न प्रकार की जलवायु में भी की जा सकती है। इसकी फसल के लिए 20 से 30 सेंटीग्रेट तापमान की आवश्यकता होती है। अरंडी के पौधे की बढ़वार और बीज पकने के समय उच्च तापमान की आवश्यकता होती है। अरंडी की खेती के लिए अधिक वर्षा यानी अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि इसकी जड़ें गहरी होतीं हैं और ये सूखा सहन करने में सक्षम होतीं हैं। पाला अरंडी की खेती के लिए नुकसानदायक होता है। इससे बचाना चाहिये।

खेत की तैयारी कैसे करें :- अरंडी के पौधे की जड़ें काफी गहराई तक जातीं हैं , इसलिये इसकी फसल के लिए गहरी जुताई करनी आवश्यक होती है। जो किसान भाई अरंडी की अच्छी फसल लेना चाहते हैं वे पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। उसके बाद दो तीन जुताई कल्टीवेटर या हैरों से करें तथा पाटा लगाकर खेत को समतल बना लें। किसान भाइयों सबसे बेहतर तो यही होगा कि खेत में उपयुक्त नमी की अवस्था में जुताई करें। इससे खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जायेगी और खरपतवार भी नष्ट हो जायेगा। इस तरह खेत को तैयार करके एक सप्ताह तक खुला छोड़ देना चाहिये। जिससे पूर्व फसल के कीट व रोग धूप में नष्ट हो सकते हैं ।

अरंडी की मुख्य उन्नत किस्में:-
अरंडी की मुख्य उन्नत किस्मों मे जीसीएच-4,5, 6, 7 व डीसीएच-32, 177 व 519, ज्योति, हरिता, क्रांति किरण, टीएमवी-6, अरुणा, काल्पी आदि हैं।

कब और कैसे करें बुआई :-
अरंडी की फसल की बुआई अधिकांशत: जुलाई और अगस्त में की जानी चाहिये। किसान भाई अरंडी की फसल की खास बात यह है कि मानसून आने पर खरीफ की सभी फसलों की खेती का काम निपटाने के बाद अरंडी की खेती आराम से कर सकते हैं। अरंडी की बुआई हल के पीछे हाथ से बीज गिराकर की जा सकती है तथा सीड ड्रिल से भी बुआई की जा सकती है। सिंचाई वाले क्षेत्रों अरंडी की फसल की बुआई करते समय किसान भाइयों को इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि लाइन से लाइन की दूरी एक मीटर या सवा मीटर रखें और पौधे से पौधे की दूरी आधा मीटर रखें तो आपकी फसल अच्छी होगी। असिंचित फसल के लिए लाइन और पौधों की दूरी कम रखनी चाहिये। इस तरह की खेती के लिए लाइन से लाइन की दूरी आधा मीटर या उससे थोड़ी ज्यादा होनी चाहिये और पौधों से पौधों की दूरी भी लगभग इतनी ही रखनी चाहिये।

कितना बीज चाहिये :- किसान भाइयों अरंडी की फसल के लिए बीज की मात्रा , बीज क आकार और बुआई के तरीके और भूमि के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है। फिर भी औसतन अरंडी की फसल के लिए प्रति हेक्टेयर 12 से 15 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

छिटकवां बुआई में बीज अधिक लगता है यदि इसे हाथ से एक-एक बीज को बोया जाता है तो प्रतिहेक्टेयर 8 किलोग्राम के लगभग बीज लगेगा। किसान भाइयों को चाहिये

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

किसान भाइयों खाद और उर्वरक काफी महंगी आती हैं इसलिये किसी भी तरह की खेती के लिए आप अपनी भूमि का मृदा परीक्षण अवश्य करवा लें और उसके अनुसार आपको खाद और उर्वरक प्रबंधन की अच्छी जानकारी मिल सकेगी। इससे आपका पैसा व समय दोनों ही बचेगा। खेती की लागत कम आयेगी। इसी तरह अरंडी की खेती के लिए जब आप खाद व उर्वरकों का प्रबंधन करें तो मिट्टी की जांच के बाद बताई गयी खाद व उर्वरक की मात्रा का प्रयोग करें।

अरंडी की खेती के लिए उर्वरक का अच्छी तरह से प्रबंधन करना होता है। अच्छे खाद व उर्वरक प्रबंधन से अरंडी के दानों में तेल का प्रतिशत काफी बढ़ जाता है। इसलिये इस खेती में किसान भाइयों को कम से कम तीन बार खाद व उर्वर्क देना होता है। अरंडी चूंकि एक तिलहन फसल है, इसका उत्पादन बढ़ाने व बीजों में तेल की मात्रा अधिक बढ़ाने के लिए बुआई से पहले 20 किलोग्राम सल्फर को 200 से 250 किलोग्राम जिप्सम मिलाकर प्रति हेक्टेयर डालना चाहिये। इसके बाद अरंडी की सिंचित खेती के लिए 80 किलो ग्राम नाइट्रोजन और 40 किलो फास्फोरस प्रति हेक्टेयर के हिसाब से इस्तेमाल करना चाहिये तथा असिंचित खेती के लिए 40 किलोग्राम नाइट्रोजन और 20 किलोग्राम फास्फोरस का इस्तेमाल किया जाना चाहिये। इसमें से खेत की तैयारी करते समय आधा नाइट्रोजन और आधा किलो फास्फोरस का प्रति हेक्टेयर के हिसाब से डालना चाहिये। शेष आधा भाग 30 से 35 दिन के बाद वर्षा के समय खड़ी फसल पर डालना चाहिये।

सिंचाई प्रबंधन:- अरंडी खरीफ की फसल है, उस समय वर्षा का समय होता है। वर्षा के समय में बुआई के डेढ़ से दो महीने तक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। इस अवधि में पानी देने से जड़ें कमजोर हो जाती है, जो सीधा फसल पर असर डालती है। क्योंकि अरंडी की जड़ें गहराई में जाती हैं जहां से वह नमी प्राप्त कर लेती हैं। जब अरंडी के पौधों की जड़ें अच्छी तरह से विकसित हो जायें और जमीन पर अच्छी तरह से पकड़ बना लें और जब खेती की नमी आवश्यकता से कम होने लगे तब पहला पानी देना चाहिये। इसके बाद प्रत्येक 15 दिन में वर्षा न होने पर पानी देना चाहिये। यदि सिंचाई के लिए टपक पद्धति हो तो उससे इसकी सिंचाई करना उत्तम होगा।

खरपतवार प्रबंधन:- अरंडी की फसल में खरपतवार का प्रबंधन शुरुआत में ही करना चाहिये। जब तक पौधे आधे मीटर के न हो जायें तब तक समय-समय पर खरपतवार को हटाना चाहिये तथा गुड़ाई भी करते रहना चाहिये। इसके अलावा खरपतवार नियंत्रण के लिए एक किलोग्राम पेंडीमेथालिन को 600 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के दूसरे या तीसरे दिन छिड़काव करने से भी खरपतवार का नियंत्रण होता है। लेकिन 40 दिन बाद एक बार अवश्य ही निराई गुड़ाई करवानी चाहिये।

कीट-रोग एवं उपचार:- अरंडी की फसल में कई प्रकार के रोग एवं कीट लगते हैं। उनका समय पर उपचार करने से फसल को बचाया जा सकता है। आईये जानते हैं कि कौन से कीट या रोग का किस प्रकार से उपचार किया जाता है:-

1. जैसिड कीट: अरंडी की फसल में जैसिड कीट लगता है। इसका पता लगने पर किसान भाइयों को मोनोक्रोटोफॉस 36 एस एल को एक लीटर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव कर देना चाहिये। इससे फसल का बचाव हो जाता है।

2. सेमीलूपर कीट: इसकीट का प्रकोप सर्दियों में अक्टूबर-नवम्बर के बीच होता है। इस कीट को नियंत्रित करने के लिए 1 लीटर क्यूनालफॉस 25 ईसी , लगभग 800 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रतिहेक्टेयर में फसल पर छिड़काव करने से कीट पर नियंत्रण हो जाता है।

3. बिहार हेयरी केटरपिलर:
यह कीट भी सेमीलूपर की तरह सर्दियों में लगता है और इसके नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस का घोल बनाकर खड़ी फसल पर छिड़काव करना चाहिये।

4. उखटा रोग:
उखटा रोग से बचाव के लिए ट्राइकोडर्मा विरिडि 10 ग्राम प्रतिकिलोग्राम बीज का बीजोपचार करना चाहिये तथा 2.5 ट्राइकोडर्मा को नम गोबर की खाद के साथ बुवाई से पूर्व खेत में डालना अच्छा होता है।

पाले सें बचाव इस तरह करें:-

अरंडी की फसल के लिए पाला सबसे अधिक हानिकारक है। किसान भाइयों को पाला से फसल को बचाने के लिए भी इंतजाम करना चाहिये। जब भी पाला पड़ने की संभावना दिखाई दे तभी किसान भाइयों को एक लीटर गंधक के तेजाब को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रतिहेक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करा चाहिये। यदि पाला पड़ जाये और फसल उसकी चपेट में आ जाये तो 10 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से यूरिया के साथ छिड़काव करें। फसल को बचाया जा सकता है।

कब और कैसे करें कटाई :-

अरंडी की फसल को पूरा पकने का इंतजार नहीं करना चाहिये। जब पत्ते व उनके डंठल पीले या भूरे दिखने लगें तभी कटाई कर लेनी चाहिये

क्योंकि फसल के पकने पर दाने चिटक कर गिर जाते हैं। इसलिये पहले ही इनकी कटाई करना लाभदायक रहेगा। अरंडी की फसल में पहली तुड़ाई 100 दिनों के आसपास की जानी चाहिये। इसके बाद हर माह आवश्यकतानुसार तुड़ाई करना सही रहता है।

पैदावार :- अरंडी की फसल सिंचित क्षेत्र में अच्छे प्रबंधन के साथ की जाये तो प्रतिहेक्टेयर इसकी पैदावार 30 से 35 क्विंटल तक हो सकती है जबकि असिंचित क्षेत्र में 15 से 23 क्विंटल तक प्रतिहेक्टेयर पैदावार मिल सकती है।

तुलसी की खेती :अच्छी आय और आवारा पशुओं से मुक्ति

तुलसी तकरीबन हर घर में पूजी जाती है। इसके गुणों से भी लोग परिचित हैं लेकिन बढ़ते रोग और आयुर्वेदिक दवाओं में इसके उपयोग ने इसकी महत्ता और बढ़ा दी है। धार्मिक नगरों के निकट तो तुलसी की लकड़ी की मंठी माला बनाने का काम हजारों लोगों को रोजगार प्रदान कर रहा है। तुलसी के औषधीय गुण बगैर रसायन वाली खेती में ज्यादा आते हैं। इसकी लागत बेहद कम आती है और छुट्टा पशु भी इसे नुकसान नहीं पहुंचा पाते।

तुलसी करीब पांच-सात प्रकार की होती है। आम तौरपर लोग रामा एवं श्यामा तुलसी के विषय में ही जानते हैं। इसकी खेती के लिए या तो किसान उन किसानों को बीज लें जो लम्बे समय से इसकी खेती कर रहे हैं या फिर उत्तर प्रदेश के लखनऊ में स्थित सगंधीय पौध संस्थान से बीज लें। इसके अलावा हर राज्य में कृषि विश्वविद्यालयों के माध्यम से तथा निकट के कृषि विज्ञान केन्द्र व जिला उद्यान कार्यालय के माध्यम से भी उचित सलाह एवं बीज मिल सकता है।

अप्रैल मई में इसकी पोघ डाली जाती है जो 10 से 15 दिन में तैयार हो जाती है। तुलसी की खेती के लिए किसी भी तरह का रासायनिक खाद प्रयोग में न लाएं। गोबर की सड़ी खाद आदि का ही प्रयोग करेंगे तो औषधीय गुण भरपूर होंगे।

तुलसी की खेती के लिए एक हैक्टेयर जमीन के लिए दो से चार किलोग्राम बीज की जरूरत होती है। तुलसी की पौध को भी बैड बनाकर डालें। मिट्टी में सड़ी गोबर की खाद एवं ट्राईकोडर्मा या कार्बनजिम जैसे किसी फफूंदनाशक को मिला लें। पौध रोपने के तत्तकाल बाद खेत में पानी लगाएं। जरूरत के अनुरूप् सिंचाई करते रहें। फूल आने से पूर्व एकबार तुडाई कर दें ताकि शाखाएं ज्यादा बनें एवं बीज, पत्ते और डंडी तीनों की उपज में इजाफा हो। तुलसी का बीज यानी मंजरी 30 से 40 हजार रुपए कुंतल तक बिकता है। इसके अलावा पत्ते थोक में भी 15 से 20 रुपए किलो बिकते हैं। यह बात अलग है कि किसानों से पत्ते खरीदने वाले बिचौलिए इन्हें 50 से 70 रुपए प्रति किलोग्राम तक कंपनियों की मांग के अनुरूप बेचते हैं।

खेती की सनक ने भरत भूषण त्यागी को बनाया पद्मश्री किसान

खेती किसानी के लिए पद्मश्री पुरस्कार पाने वाले भरत भूषण त्यागी सनक पर सवार किसान रहे हैं। वह जब गांव छोड़कर जंगल में मंगल करने खेतों पर बसेरा बनाने पहुंचे तो कई लोगों ने उन्हें सनकी दीवाना ही कहा होगा। गांव में दूसरे लोगों को लेकर आनंद लेने की प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए इस तरह की घटनाएं एक मुद्दा होती हैं। ग्रामीणों को अंदाजा भी नहीं लगा कि कुछ सालों में यह दीवाना अपनी दीवानगी की वजह से देश के शीर्ष पुरस्कार पाने वालों में जगह बना गया। खेती किसानी के लिए उनका समर्पण ही उन्हें इस सम्मान का हकदार बना पाया। खेती को लेकर गहरा चिंतन चौपालों पर चटखारों के बीच नहीं हो सकता। खेती अपने आप में बहुत बड़ा विज्ञान है। इसमें हर पल और हर गूढ़ ज्ञानी के लिए चुनौतियों का अंबार लगा पड़ा है। कोई भी छोटा सा बदलाव खेती की तस्वीर बदल देता है। यह प्रक्रिया हर बार नए परिणाम देने लगे तो प्रयोग धर्मी भी हांफ जाए, आखिर एक ही काम को करने से पहले इतने अच्छे परिणाम मिले लेकिन बाद में उनमें बेहद बदलाव हो गया। आखिर ऐसा हुआ तो क्यों हुआ। इसे कैसे रोका जाए। कुछ इस तरह की जिज्ञासाओं ने ही श्री त्यागी को 135 करोड़ आबादी के बहुसंख्यक किसानों में खास बनाया।

गांव के बाहर खेतों पर घर बनाकर परिवार के साथ प्रकृति की गोद में आनंद लेने वाले इस सख्स का परिवार भी इस रंग में ढल गया। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जनपद स्थित बीटा गांव निवासी भरत भूषण त्यागी का काम अलग तरह का रहा है। वह खेती के आधुनिक तरीकों से जल्द हार मानकर जैविक तरीकों की तरफ मुड़े और उन्हें जीवन के सभी रंग यहां मिल गए। जैविक खेती को लेकर वह कहते हैं कि किसान यादि कुछ बातों का ध्यान रखें तो खेती घाटे का सौदा है यह बात कहीं सुनाई नहीं देगी। वह कहते हैं कि खेती में उत्पादन, प्रसंस्करण, प्रमाणीकरण एवं बाजार अहम घटक हैं। प्रकृति के साथ के बगैर इन सभी को सार्थक परिणाम तक पहुंचाना आसान नहीं है। किसान उत्पादन तक सिमट जाता है। यही कारण है कि वह आगे के कारकों पर ध्यान नहीं दे पाते और अपनी मेहनत की कमाई को सस्ते में लुटाते रहते हैं। वह कहते हैं कि मिश्रित और सहफसली खेती से वह सालना एक एकड़ से तीन से चार लाख कमाते हैं। श्री त्यागी मल्टीलेयर फॉर्मिंग खेती के मॉडल पर काम करते रहे हैं। वह कहते हैं कि जमीन के साथ आसामान में खाली पड़े आसमान का कृषि में उपयोग करने का उनका सपना था। इसके चलते उन्होंने अपनी खेती में एक ही खेत में पहली लाइन में मकाओ के पौधे, उसकी बगल में केला, उसके साथ गन्ना एवं सबसे नीचे हल्दी की खेती करना शुरू किया। मकाओ को छोडकर तीनों फसल साल में एक बार हार्बेस्ट होती हैं लेकिन एक दशक में मकाओ के पौधे से अच्छी खासी आय हो जाती है और पर्यावरण संरक्षण का काम भी खेती के साथ साथ होता है।

श्री त्यागी बताते हैं कि **1974** में दिल्ली विश्वविद्यालय से विज्ञान वर्ग से बीएससी करने के बाद वह गांवा आ गए और खेती में लग गए। जब आम किसानों की तरह खेती करने लगे तो उन्हें मोटा नुकसान उठाना पड़ा। इसके बाद उन्होंने खेती को लाभकारी बनाने के लिए अपने ज्ञान और कौशल का प्रयोग शुरू किया। दिल्ली के नजदीक होने और वहीं शिक्षा लेने के कारण उन्होंने अच्छा और हेल्दी फूड चाहने वाले लोगों की नब्ज को पकड़ा और उत्पादन से लेकर विपण ान तक जैविक खेती की चेन पर काम शुरू कर दिया। वह तीन दशक से इसी काम में लगे हैं। करीब 12 एकड़ जमीन के मालिक श्री त्यागी के खेत में फल, सब्जी, अनाज, पौधे जैसी **25** तरह की फसलें अपने खेत पर उगाते हैं। इस दिशा में अन्य किसानों को प्रेरित करने के लिए वह ट्रेनिंग भी देते हैं। वह खेती को प्राकृतिक संतुलन के अनुरूप करने के हिमायती हैं। वह कहते हैं कि खेती के साथ कीट और खरपतवारों का भी सामन्जस्य है। इन्हें कम करने के अनेक परंपरागत तरीके हैं फिर जहरों का प्रयोग कर प्राकृतिक संतुलन क्यों बिगाड़ा जाए। यानी किसी भी खेत में सरसों लग. ाने से खपतवारों का प्रकोप कम हो जाता है।

वह खेत के चारों तरफ बफरजोन बनाने की भी बात करते हैं ताकि मौसम की प्रतिकूलता का कम प्रभाव खेती पर पड़े। वह मेढ़ों पर लेमनग्रास आदि बढ़ने वाली फसलों की बाढ़ बनाने की बात करत हैं। वह खेती के अपने प्रयोगों को अपने फार्म पर किसानों को दिखते भी हैं और समझाते भी हैं। सीधे अर्थो में जानें तो उनके तरीके से किसी खेत से गेहूं की एक ट्राली भरे न भरे लेकिन किसान की जेब में हर समय नोट जरूर आते रहेंगे। नगदी फसलें, टिम्बर, मौसमी फसलों के समिश्रण से सतत आय का उनका फार्मूला आज के दौर में एक हैक्टेयर जमीन वाले किसानों के लिए भी कारगर प्रतीत होता है।

प्रेमसिंह संरक्षित खेती से हुए मालामाल

तीन साल में दो नौ हजार वर्गमीटर में बनाया पॉलीहाउस, कमा रहे 12 लाख सालाना झालीवाडा खुर्द जोधपुर राजस्थान के 29 वर्षीय युवा किसान प्रेमसिंह ने संरक्षित खेती अपनाकर सालाना 12 लाख रुपए की आमदनी की व्यवस्था की है। वह कहते हैं कि संरक्षित खेती के लिए पॉलीहाउस, नेटहाउस आदि भी खूब लग रहे हैं। 2000 वर्ग मीटर के पॉलीहाउस में पहलीबार 18 टन खीरा हुआ। बगैर ट्रेनिंग के ही पॉलीहाउस लगा लिया और परंपरागत तरीके से सब्जियों की खेती करने के कारण उन्हें पॉलीहाउस में खेती करने में कोई दिक्कत नहीं रही। वह वर्तमान में खीरा एवं टमाटर की खेती करते हैं। नेट हाउस में करेला की खेती करते हैं। यहीं पौधे तैयार करते हैं। तीन साल में उन्होंने सात हजार वर्ग मीटर पॉलीहाउस लगा दिया है। दो हजार वर्ग मीटर के पॉलीहाउस पर काम चल रहा है। वह संरक्षित खेती के अलावा काफी बड़े क्षेत्र में लो टनल विधि से तोरई जैसी सब्जियों की फसल लेते हैं। प्रेमसिंह ने 12 वीं तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद खेती में ही अपना मन लगा लिया। इसके लिए उन्होंने सबसे पहले यूट्यूब आदि पर लोगों को देखा। इसके बाद कृषि महकमे के अफसरों से मिलना शुरू किया और इसके बाद राह बनती गई। परिवार के पास 10 बीघा कृषि

भूमि थी। इस रकबे से खेती से मुनाफा मिलना काफी मुश्किल था। जमीन लीज पर लेकर खेती का दायरा बढ़ाया। वह कहते हैं कि परंपरागत खेती से उनके परिवार का रात दिन खटने के बाद भी गुजारा नहीं होता था। इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने नई दिशा में काम करना शुरू किया।उद्यान विभाग की अनुदान योजना का लाभ लेकर 2 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में पॉली हाउस स्थापित कराया। इसमें खीरे की फसल का उत्पादन लेना शुरू किया। जहां भी परेशानी आई, स्थानीय कृषि

अधिकारियों के साथ काजरी जोधपुर के वैज्ञानिकों से मार्गदर्शन प्राप्त करता रहा। इसी का परिणाम है कि

संरक्षित संरचना में खीरे के बाद टमाटर फसल का सफल उत्पादन लेने के गुर अब जुबानी हो गए है। उन्होंने बताया कि पहले सिंचाई के लिए

ट्यूबवैल था। लेकिन, पानी की कमी के चलते एक नये कुएं का निर्माण कराया है। बता दें कि प्रेम सिंह 30 बीघा जमीन लीज पर लेकर खेती कर रहे है। उन्होंने बताया कि परम्परागत फसलों में जीरा, गेहूं, मूंग, ज्वार और तिल का उत्पादन लेता हूं। इन फसलों से खर्च निकालने के बाद 3 लाख रुपए की आय मिल जाती है।

खीरा बना लाभकारी:- उन्होंने बताया कि पॉली हाउस की स्थापना के बाद खीरा और टमाटर की फसल पर ही मेरा फोकस रहा। इसके चलते दोनों फसलों से 7-8 लाख रुपए की आय सालाना मिल जाती है। उन्होंने बताया कि साढे तीन साल पहले 2 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में पॉली हाउस स्थापित कराया था। संरक्षित खेती का लाभ-हानि समझ आने के डेढ़ साल बाद 4 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में एक और पॉली हाउस स्थापित कराया। उन्होंने बताया कि इसके अलावा पौध तैयार करने के लिए 1000 वर्ग मीटर क्षेत्र में नेट हाउस भी स्थापित किया है। वहीं, 2 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में एक और पॉली हाउस का निर्माण कार्य चल रहा है। 8 बीघा क्षेत्र में सब्जी उत्पादन उन्होंने बताया कि पॉली हाउस की खेती में सफलता मिलने के बाद अब ओपन फील्ड में भी सब्जी उत्पादन का कार्य शुरू कर दिया है। इस साल प्लास्टिक मल्च और ड्रिप का उपयोग करते हुए 8 बीघा क्षेत्र में बेलदार सब्जियों की बुवाई की है। सब्जी फसल में लौकी, तुरई, खीरा, करेला सहित दूसरी सब्जी फसल शामिल है। उन्होंने बताया कि जल और विद्युत बचत के लिए फार्म पौंड और सोलर

पंप स्थापित कराया हुआ है। पॉली हाउस के पास में बरसाती पानी को संग्रहित करने के लिए दो फार्म पौंड बनाएं हुए है। इससे सिंचाई की अब समस्या नहीं रही है।

उन्होंने बताया कि पशुधन में मेरे पास 3 गाय है। प्रतिदिन 10-12 लीटर दुग्ध का उत्पादन मिल रहा है। दुग्ध घर में काम आ जाता है। वहीं, पशु अपशिष्ट से जीवामृत, बीजामृत सहित दूस. रे जैविक कीटनाशक तैयार करके उपयोग ले रहा हूं। उन्होंने बताया कि सभी फसलों में जहां तक संभव होता है, जैविक कीटनाशक का उपयोग करता हूं। नियंत्रण नहीं हो पाने की स्थिति में ही फसल में कीटनाशक का स्प्रे करता हूं। वह कहते हैं कि

पॉलीहाउस लगाने के लिए पानी और मिट्टी का अच्छा पीएच होना आवश्यक है। इसके बगैर इस दिशा में काम करने की कोई भी नए किसान भाई न सोचें। वह कहते हैं कि पॉलीहाउस में तैयार खीरा यदि **15-20** रुपए

किलोग्राम से कम कीमत पर बिकता है तो किसान को कुछ नहीं बचता लिहाजा समय का ध्यान रखते हुए उस समय पर फसल लगाएं जबकि बाजार में ओपन फीलड की फसल न आती हो।

नवंबर माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

गेहूं

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में सिंचित गेहकी बुवाई का उत्तम समय नवंबर का पहला पखवाड़ा है,जबकि उत्तर पूर्वी क्षेत्रों एवं मध्य भारत में सिंचित गेहूं की बुवाई का सही समय मध्य नवंबर है। सिंचित दशा में देर से बुवाई दिसंबर के प्रथम पखवाड़े में समाप्त कर लेनी चाहिए। सिंचित दशाओं में समय से बुवाई के लिए बीजदर 100 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर है। देर से बुवाई करने पर गेहू की उचित बीजदर 125 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर है। बीज साफ, स्वस्थ एवं खरपतवारों के बीजों से रहित हो। यदि पिछले वर्ष का बीज प्रयोग कर रहे हैं तो उसको बाविस्टीन अथवा थीरम दवा (2.5 ग्रा. धकि.ग्रा. बीज) से उपचारित कर लेना चाहिए समय से बुवाई एवं सिंचित परिस्थिति में 150 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 40 कि. ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की संस्तुति की गई है। जिंक की कमी वाली मृदाओं में 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर जिंक सल्फेट का प्रयोग आवश्यक होता है।

देर से बुवाई एवं सिचित परिस्थिति में 120 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की संस्तुति की गई है जिंक की कमी वाली मृदाओं में 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर जिंक सल्फेट का प्रयोग आवश्यक होता है। नाइट्रोजन की आधी एवं फास्फोरस पोटाश तथा जिंक सल्फेट की सम्पूर्ण मात्रा का प्रयोग खेत में बुवाई के समय करें नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा का प्रयोग पहली सिंचाई के बाद करें। सामान्यतः गेहूं की बुवाई 15 23 से.मी. की दूरी पर देसी हल अथवा सीडड्रिल से पंक्तियों में की जाती है. पंक्तियों की दूरी मृदा की दशा, सिंचाई जल की उपलब्धता और बुवाई के समय पर निर्भर करती है. सिंचित परिस्थिति में समय पर बुवाई करने पर 23 से मी. दूरी उपयुक्त होती है.देर से बुवाई करने पर यह दूरी घटाकर 15-18 सें.मी. कर देनी चाहिए। बुवाई की गहराई 5 से मी. उपयुक्त है।

धान-गेहूं फसल प्रणाली में कई बार धान की कटाई देर से होती है जिसके कारण गेहूं की बुवाई में देरी हो जाती है. यदि गेहूं की कटाई के बाद पलेवा करके खेत की बुवाई के लिए तैयारी की जाती है तो इससे बुवाई में और अधिक देरी हो जाती है. इस दशा में जीरो टिलड्रिल (शून्य जुताई) जुताई के गेहूं की सीधी बुवाई की जा सकती है परंतु खेत में पर्याप्त नमी का होना जरूरी है। इस कार्य के लिए हैप्पी अरथवा टर्बोसीडर मशीन का प्रयोग भी किया जा सकता है। इस मशीन द्वारा धान की कटाई के बाद अधिक मात्रा में फसल अवशेष (पुआल) होने पर भी आसानी से बुवाई की जा सकती है. रोटरी टिलड्रिल मशीन एक ही बार में जुताई, बुवाई, उर्वरक प्रयोग एवं पाटा लगाने का कार्य करती है गेहूं की बुवाई मेंड़ों पर भी की जा सकती है। इस तकनीक में खेत की तैयारी पारंपरिक विधि से करते हैं। इसके बाद बैड प्लांटर मशीन खेत में मेड़ बनाकर उसी समय गेहूं की दो या तीन पंक्तियों में बुवाई कर देती है।

जौ की बुवाई

जौ रबी मौसम की एक अन्य महत्वपूर्ण फसल है. यह फसल कम उपजाऊ भूमि और पानी की कम उपलब्धता वाली परिस्थितियों में आसानी से की जा सकती है। साथ ही लवणीय भूमियों में भी जौ को उगाया जा सकता है. सिंचित भूमि में समय पर बुवाई के लिए 75 -80 कि.ग्रा., पछेती बुवाई, बारानी दशा अथवा लवणीयध्क्षारीय भूमियों में 100 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। मैदानी क्षेत्रों में जौ की बुवाई का उपयुक्त समय 1 से 25 नवंबर तक है, परंतु इसकी बुवाई 25 दिसम्बर तक (पछेती) अवश्य समाप्त कर लेनी चाहिए। बुवाई देसी हल अथवा सीडड्रिल द्वारा 23-25 से.मी. दूरी पर की जाती है. बुवाई की उपयुक्त गहराई 4-5 सें.मी. है। मृदा परीक्षण की अनुपस्थिति में जौ के लिए 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 30 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 20 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की संस्तुति की गई है. नाइट्रोजन की आधी एवं फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा का प्रयोग खेत में बुवाई के समय करें नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा को पहली सिंचाई के बाद खेत में बुरक दें।

दलहनी, तिलहनी एवं चारा फसले

यदि रबी मौसम की उपरोक्त फसलों की बुवाई अभी तक नहीं हो सकी हो तो इस माह के प्रथम पखवाड़े में अवश्य समाप्त कर लें. उपरोक्त फसलों की प्रारम्भिक अवस्था में उचित नमी बनाए रखना आवश्यक होता है। साथ ही समय-समय पर उपयुक्त विधियों के द्वारा खरपतवार उन्मूलन भी करते रहें। बरसीम की फसल यदि कटाई योग्य हो तो उसकी पहली कटाई इस माह के अंत तक अवश्य कर लें। तोरिया की फसल से अच्छी उपज लेने के लिए दो सिंचाई- पहली फूल आने के पूर्व एवं दूसरी फल बनने की अवस्था पर करें समय पर बोई गई सरसों की फसल में विरलीकरण तथा खरपतवार नियंत्रण का कार्य करें। यदि सरसों की फसल 35 दिन की हो गयी हो और वर्षा की कोई संभावना न हो तो पहली सिंचाई करें। सरसों में पेटेंड बग की निरंतर निगरानी करते रहें तथा प्रकोप अधिक हो तो नियंत्रण के लिए कार्बरिल 2 ग्राम ६ लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

आलू की देखभाल

आलू की फसल की अच्छी बढ़वार एवं कंदों के उपयुक्त विकास के लिए पर्याप्त हवा, नमी और उपयुक्त तापमान का मिलना आवश्यक है समय से बोई गई फसल में मिट्टी चढ़ाने का कार्य इस माह कर लेना चाहिए। यदि पौधों की ऊंचाई 15-22 सें.मी. हो जाए तो इसको फसल में मिट्टी चढ़ाने की उपयुक्त अवस्था मान लेनी चाहिए। सामान्यतः यह अवस्था मैदानी और पहाड़ी क्षेत्रों में क्रमशः बुवाई के 30-35 और 40-45 दिन बाद आ जाती है. मिट्टी चढ़ाने के लिए खुरपी, फावड़े, मिट्टी पलट हल अथवा रिजर आदि का प्रयोग किया जा सकता है। आवश्यकतानुसार इस प्रक्रिया को 15 दिन बाद दोहरा लें। साथ ही फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं खरपतवार प्रबंधन भी करते रहें। रोगों एवं कीड़े-मकोड़ों पर भी नजर बनाए रखें और आवश्यकतानुसार इनका नियंत्रण भी करें।

सब्जियाँ

• यह समय ब्रोकली, पछेती फूलगोभी, बन्दगोभी तथा टमाटर की पौधशाला तैयार करने के लिए उपयुक्त है। पौधशाला भूमि से उठी हुई क्यारियों पर ही बनाएँ. जिन किसानों भाईयों की पौधशाला तैयार है,वह मौसस को ध्यान में रखते हुये पौध की रोपाई ऊंची मेड़ों पर करें। ब्रोकली की उन्नत किस्में हैं: पालम समृद्धि, पालम कचंन (सामान्य किस्में). ऐश्वर्या पेकमेन (संकर किस्मे)। यह अवश्य ध्यान रखें कि बीज विषाणु रोग रहित हो।

• इस माह भी सरसों साग (पूसा साग-1) मूली (जापानी व्हाईट, हिल क्वीन, पूसा मृदुला),पालक (आल ग्रीन, पूसा भारती), शलगाम (पूसा स्वेती या स्थानीय लाल), बथुआ (पूसा बथुआ-1), मेथी (पूसा कसुरी), गांठ गोभी (व्हाईट वियना, पर्पल वियना) तथा धानिया (पंत हरितमा), आदि किस्मों की बुवाई मेड़ों पर की जा सकती है।

• गाजर की बुवाई इस माह भी की जा सकती है बुवाई मेड़ों पर करना अच्छा रहता है. गाजर की उन्नत किस्में हैं- पूसा रूधिरा और पूसा केसर। गाजर की बीज दर 4.0 कि.ग्रा. प्रति एकड़. है. बुवाई से पूर्व बीज को केप्टान ६ 2 ग्रा. प्रति कि.ग्रा बीज की दर से उपचारित करें तथा खेत में देसी खाद, पोटाश और फास्फोरस उर्वरक अवश्य डालें। गाजर की बुवाई मशीन द्वारा करने से बीज 1.0 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की आवश्यकता होती है जिससे बीज की बचत तथा उत्पाद की गुणवत्ता भी अच्छी रहती है।

- सब्जियों की रोपाई से पहले खेत में गोबर की सड़ी खाद का उपयोग करें, क्योंकि यह मृदा के भौतिक तथा जैविक गुणों को सुधारती है तथा मृदा की जल धारण क्षमता भी बढ़ाती है।
- लहसुन की बुवाई का कार्य अविलंब सम्पन्न करें। उन्नत किस्में हैं: जी-1, जी-41, जी-50, जी-282, आदि।
- फूलगोभी एवं बंदगोभी की तैयार फसल की कटाई करके बाजार में बिक्री हेतु भेजें।
- मेथी और पालक की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- इस माह जीरे और सौंफ की बुवाई की जा सकती है।
- अगेती मटर की फलियाँ यदि तैयार हो गई हों तो उनकी तुडाई करके बाजार में बिक्री हेतु भेजें।
- शिमला मिर्च और धनिये की बुवाई इस माह भी की जा सकती है।
- गाजर की यूरोपियन किस्मों जैसे नेंटीस, पूसा यमदाग्निी, मूली की यूरोपियन किस्मों जैसे हिल क्वीन, जापानीज व्हाईट, पूसा हिमानी चुंकदर की किस्म क्रिमसन ग्लोब तथा शलगम की पी टी डब्लू जी आदि की बुवाई इस समय कर सकते हैं।

- पिछले माह बोई गई गाजर, मूली, बंदगोभी, फूलगोभी, और बैंगन, आदि फसलों में उपयुक्त विधियों द्वारा खरपतवारों का नियंत्रण करें साथ ही कीड़े-मकोड़ों एवं रोगों की फसलों मेंनिगरानी करते रहें और आवश्यकतानुसार उनका प्रबंधन करते रहें।

उद्यान

- अंगूर की बेलों में इस समय सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि इस समय ये सुषुप्तावस्था में होती हैं।
- मौसमी, माल्टा, नींबू और किन्नों आदि फल इस माह पकना आरंभ कर देंगे उपरोक्त फलों को सही अवस्था पर तोड़कर बाजार में बिक्री हेतु भेजें।
- एक, दो एवं तीन वर्ष वाले बेर के पौधों में क्रमशः 250, 500 एवं 1000 ग्रा. यूरिया देकर गुड़ाई करें।
- आम में मिली बग (एक प्रकार का कीड़ा) के अंडों को नष्ट करने के लिए तने के आसपास वाली भूमि में निराई-गुड़ाई करें।
- छोटे फलदार वृक्षों जैसे अमरूद, आम, लीची, पपीता और नींबूवर्गीय पौधों आदि को पाले से बचाने का प्रबंध अभी से आरंभ कर दें।
- आम या अन्य फलों के बागों में खाद व उर्वरकों का प्रयोग करने का यह सही समय है।
- नींबूवर्गीय सभी फलवृक्षों में गोबर की खाद उम्र के आधार पर 20-60 कि.ग्रा. प्रति पौधा मिट्टी में डालकर मिश्रित करें।
- गेंदे के तैयार फूलों को तोड़कर बिक्री हेतु बाजार भेजें।
- पिछले माह बोई गई पुष्पीय फसलों में सिंचाई, निराई-गुड़ाई और फसल सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

कृषि पत्रकार बनें

मेरी खेती डॉट कॉम बेवासइट एवं यूटयूब चैनल के लिए आप अपने क्षेत्र के सफल किसान की कहानी या वीडिया हमें हमारी Email Id:- merikhetiindia@gmail.com पर भेज सकते हैं। हम उन्हें अन्य किसानों को प्रेरित करने के लिए अपने कार्यक्रम में शामिल करेंगे। किसान आपस में ज्ञान को बहुत तेजी से सीखते समझते हैं। आप यदि युवा हैं और खेती में कुछ करना या आगे बढ़ना चाहत हैं तो इस दिशा में विचार कर सकते हैं। हम आपके विचार को परवान चढ़ाने के लिए सदैव उत्साहित रहेंगे।

EURO 47
धाकड़ है!
ताकत, फीचर्स,
किफ़ायत या दाम में
लड़ा लो किसी भी 50HP
श्रेणी के अन्य ट्रैक्टर से
• यूरो 50 का दमदार इंजन
• पावरट्रैक की मानी हुई किफ़ायत
37 kW श्रेणी
(50 HP) श्रेणी
चलाए आसानी से
2.13 मी
(7 फीट)
रोटावेटर
फुल्ली लोडेड
ड्यूअल क्लच
साइड शिफ्ट गियर
मल्टी स्पीड व रिवर्स PTO
0.37 m x 0.71 m (14.9 x 28) टायर
*नियम व शर्तें लागू।
POWERTRAC

नये ज़माने की
स्मार्ट टेक्नोलॉजी
FARMTRAC 45
SMART
35.79 kW श्रेणी
(48 HP श्रेणी)
FARMTRAC

भारत का पहला इनलाइन हाई स्पीड ट्रैक्टर
नाम ही काफ़ी है।
3600-2
50 hp
37.28 kW (cat.)
Allrounder Plus+
6
साल
T-वारंटी